सत्यमेव जयते

संयुक्ता

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय), चंडीगढ़

आठवां अंक

संयुक्ता परिवार

पीछे खड़े बाँए से दाँए

श्री निशांत अधलखा (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी), सुश्री गीता तनेजा (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी), श्रीमती अलका चोपड़ा (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी), श्री अनिल कुमार (लेखापरीक्षक)

कुर्सियों पर बाँए से दाँए

श्री रमेश कुमार शर्मा (निदेशक), श्री सुशील कुमार ठाकुर (महानिदेशक),
श्रीमती प्रतिभा अग्रवाल (निदेशक), श्री रविन्द्र सिंह (निदेशक),

आठवां अंक

संयुक्ता

2021

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

संयुक्ता परिवार

मुख्य संरक्षक श्री सुशील कुमार ठाकुर (महानिदेशक)
संरक्षक श्री रमेश कुमार शर्मा (निदेशक)
श्रीमती प्रतिभा अग्रवाल (निदेशक)
श्री रविन्द्र सिंह (निदेशक)

मुख्य संपादक सुश्री गीता तनेजा (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)
संपादक श्रीमती अलका चोपड़ा (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी)
श्रीमती दीपशिखा पुंज (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
सह संपादक श्री अमित (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
श्री निशांत अधलखा (सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी)
श्री अनिल कुमार (लेखापरीक्षक)

§§§§§§§§§§§§§§§§§§§§

अंक : आठवां (ई-पत्रिका)

प्रकाशक : कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

§§§§§§§§§§§§§§§§§§§§

नोटः पत्रिका में छपी रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने विचार हैं। संयुक्ता परिवार का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता, उसमें प्रस्तुत तथ्यों तथा आंकड़ों की प्रमाणिकता के लिये रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

अनुक्रमणिका

संदेश		पृष्ठ
1.	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब का संदेश	5
2.	महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा का संदेश	6
3.	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा का संदेश	7
4.	प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएँ) चंडीगढ़ का संदेश	8
5.	प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पंजाब एवं यू.टी. का संदेश	9
6.	मुख्य संरक्षक का संदेश	10
7.	संरक्षक का संदेश	11
8.	संपादकीय	12
9.	पाठकों के पत्र	13-15

रचनाएँ

क्रम सं.	कहानी/ लेख/ कविताएँ		श्री/श्रीमती/सुश्री	पृष्ठ
1.	रंगोली	कविता	नवीन कुमार	17
2.	कामवाली	कहानी	नवीन कुमार	18
3.	अपना-पराया	कविता	मुनीष भाटिया	19
4.	योग भगाए रोग	लेख	दीपशिखा पुंज	20-21
5.	औरत हूं मैं	कविता	अलका चोपड़ा	22
6.	अस्तित्व	लेख	सुदेश कुमार	23
7.	जीवन के नाटक में मंच के नाटक का योगदान	लेख	योगेश कुमार मिश्र	24-25
8.	जीवन और तुम	कविता	योगेश कुमार मिश्र	26
9.	कार्यालयीन गतिविधियां	....	....	27
10.	फोटो गैलरी	....	....	28-32
11.	समाज	लेख	सोनू कुमार	33
12.	नारी तू महान है	कविता	दीपक कुमार	34
13.	मात-पिता	कविता	रिया खटकड़	35
14.	बेलगाम लश्कर तैयार करने में प्रयासरत सोशल मीडिया	लेख	मुनीष भाटिया	36-38
15.	कोरोना काल और हम	कविता	राजपाल	39
16.	मेरे साथ मेरा क्या जाएगा	कहानी	बलजिन्द्र कौर	40-41

17.	ख्वाहिशें	कविता	रश्मि महाजन	42
18.	शायरी	कविता	दीपक कुमार	43
19.	शायरी	कविता	संतोष कुमार	44
20.	बच्चों की कलाकृतियां	......	......	45-48
21.	शायर दिल	कविता	रविंद्र सिंह	49
22.	चालीस साल	कविता	संजीव	50
23.	संतोष धन	कविता	विजय कुमार अधलखा	51
24.	खुद से	कविता	विजय कुमार अधलखा	52
25.	हल्दी रोग भगाए जल्दी	लेख	बलजिन्द्र कौर	53-54
26.	मधुर वाणी	लेख	यादेव सिंह	55
27.	धर्म और नैतिक मूल्य	लेख	बीर सिंह	56-57
28.	अनुशासन का महत्व	लेख	अनिल कुमार	58
29.	सृष्टि	कविता	जसबीर कौर	59
30.	मैं कविता हूं	कविता	कविता गुप्ता	60
31.	चुटकुले	....	राजीव वालिया	61
32.	नकद पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची	....	....	62-63
33.	हिन्दी पखवाड़ा के विजेताओं की सूची	....	....	64
34.	सेवा निवृत्तियां	....	....	65
35.	श्रद्धांजलि	....	....	65
36.	होनहार बच्चे	....	....	66

※※※※

हिन्दी ही ऐसी भाषा है जिसमें हमारे देश की सभी भाषाओं का समन्वय है।

पुरुषोत्तम दास टंडन

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "संयुक्ता" के आठवें अंक का प्रकाशन शीघ्र ही होने जा रहा है। इस संबंध में मेरी ओर से ढेरों शुभकामनाएं। एक भाषा के रूप में हिन्दी न केवल भारत की पहचान है बल्कि, यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति और संस्कारों की सच्ची संवाहक एवं परिचायक भी है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि संयुक्ता पत्रिका का यह अंक भी कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सहायक एवं इसके प्रति अभिरुचि और जागरूकता का वातावरण बनाने में प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

पूनम पाण्डेय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चण्डीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कार्यालय की विभागीय हिन्दी पत्रिका "संयुक्ता" के आठवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। यह पत्रिका कार्यालय में वर्ष भर होने वाली गतिविधियों और कार्यक्रमों की झलकियों के साथ-साथ अधिकारियों/कर्मचारियों की भावनाओं को लिखित रुप देकर हिन्दी का प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करती है। आज हिन्दी न केवल आम आदमी की भाषा है बल्कि विज्ञान, उद्योग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपना दबदबा स्थापित करके अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित कर रही है जोकि हर हिन्दी प्रेमी को गौरान्वित कर रही है।

राजभाषा हिन्दी ने सदैव पूरे देश को एक सूत्र में बांधने का कार्य किया है। इस दिशा में विभागीय हिन्दी गृह पत्रिका "संयुक्ता" भी राजभाषा के प्रति श्रद्धाभाव को जागृत करते हुए राष्ट्रीय प्रेम को उजागर कर रही है। आशा है कि भविष्य में भी राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रति इसी प्रकार का उत्साह बनाए रखें।

मैं हिन्दी पत्रिका "संयुक्ता" के सभी लेखकों, पाठकों तथा संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

(विशाल बंसल)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा
चण्डीगढ़।

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंन्द्रीय) चण्डीगढ़, की विभागीय हिन्दी पत्रिका "संयुक्ता" के आगामी अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान है तथा विभिन्न कार्यालयों में होने वाली सांस्कृतिक व अन्य गतिविधियों से अवगत कराती हैं।

संवैधानिक एवं नैतिक दायित्वों पर निष्ठापूर्वक अमल करते हुए राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार में गृह पत्रिकाएं निरंतर अहम् भूमिका निभा रही हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रति समर्पित होते हुए हम सबका यह संवैधानिक दायित्व है कि हम अपना कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में करें, जिससे राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में वृद्धि हो। हिन्दी एक समृद्ध और सशक्त भाषा है। इसमें कार्य करके हमें गर्व का अनुभव होना चाहिए।

पत्रिका के संपादक एवं प्रबन्धक मण्डल के प्रयासों की सराहना करते हुए मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

(विशाल बंसल)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), हरियाणा
चण्डीगढ़।

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'संयुक्ता' के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

कार्यालयी हिंदी पत्रिकाएँ अधिकारियों व कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति अभिरुचि को व्यक्त करने के साथ-साथ उन्हें अपनी लेखन प्रतिभा को उजागर करने का अवसर प्रदान करती है । आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'संयुक्ता' कार्मिकों में रचनात्मक वृद्धि तथा राजभाषा हिंदी के प्रति जागरुकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । पत्रिका प्रकाशन में सहयोगी अधिकारी व कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं ।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

(श्री वी.एस. वेंकटनाथन)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवाएँ),
चंडीगढ़

संदेश

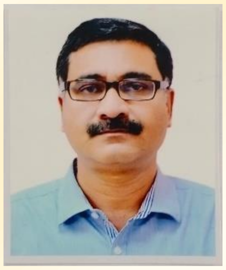

मुझे प्रसन्नता है कि आपके कार्यालय में विभागीय हिन्दी पत्रिका 'संयुक्ता' का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार से सम्बंधित सभी रचनाकारों, पाठकों और सह संपादकों को बधाई देता हूँ।

विभागीय पत्रिकाएं राजभाषा हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार में एक अहम् आयाम प्रस्तुत करते हुए मील का पत्थर साबित हुई हैं। हिन्दी पत्रिका विभागीय सदस्यों को अपना हुनर तराशने का अवसर प्रदान कराती है और हिन्दी भाषा के सुनहरे भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक है। ये पत्रिकाएं समस्त कार्यालयों के मध्य सामंजस्य का कार्य करती हैं, जिससे एक-दूसरे कार्यालयों के सृजनात्मक कौशल एवं गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलती रहती है।

'संयुक्ता' पत्रिका के उत्कृष्ट सम्पादन एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों का पुनः अभिनन्दन करता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(होवैदा अब्बास)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़

मुख्य संरक्षक का संदेश

असीम आनंद और हर्ष का विषय है कि राजभाषा नीति कार्यान्वयन के क्रम में हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "संयुक्ता" के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिन्दी ही एकमात्र भाषा है जिसने पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोया है। यदि हम चाहते हैं कि हिन्दी फले-फूले, तो हमें हिन्दीमयी वातावरण बनाना होगा। राजभाषा हिन्दी के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए समग्र एवं सामूहिक प्रयास करने होंगे। इसी क्रम में अग्रसर रहते हुए हिन्दी पत्रिका "संयुक्ता" ने राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों एवं उनके परिवारजनों को रचनात्मक मंच प्रदान करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुझे आशा है कि पत्रिका अपनी परम्परागत गरिमा और विशिष्टता को कायम रखते हुए उत्तरोतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(सुशील कुमार ठाकुर)
महानिदेशक

संरक्षक का संदेश

बड़े ही हर्ष की बात है कि हमारे कार्यलय द्वारा राजभाषा पत्रिका "संयुक्ता" के आठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिन्दी पत्रिका का सतत् प्रकाशन राजभाषा के प्रति हमारी निष्ठा का परिचायक है। इससे कार्यालय में हिन्दी के प्रति न केवल रुझान बढ़ा है बल्कि एक सकारात्मक वातावरण भी तैयार हुआ है। यह पत्रिका इसी प्रकार राजभाषा के संवर्धन में अपना सार्थक योगदान तथा कार्यालय के कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देगी।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी राजभाषा प्रगति में सहायक सिद्ध होगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों, संपादक मंडल के सदस्यों तथा पत्रिका प्रकाशन के कार्य में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से जुड़े सभी लोगों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति के लिए शुभकामनाओं के साथ।

(रमेश कुमार शर्मा)
निदेशक

संपादकीय

'संयुक्ता' के आठवें अंक को ई-पत्रिका के रूप में आपके समक्ष रखते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका 'संयुक्ता' का प्रकाशन राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार और कार्यालय कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा के प्रस्तुतीकरण के उद्देश्य से शुरु किया गया था। आज आठवें अंक का प्रकाशन यह साबित करता है कि हम अपने उद्देश्य की ओर निरंतर प्रगति कर रहे हैं।

हिन्दी के विकास एवं इसे सुदृढ़ बनाने हेतु हमारी सरकार की प्रतिबद्धता काबिले तारीफ है। हिन्दी दिवस पर गृह मंत्री का संदेश इस प्रतिबद्धता को स्पष्टतया दर्शाता है। इस धारणा को अवधारित कर इस कार्यालय के अधिकारीगण/कर्मचारीगण हिन्दी के अधिकाधिक प्रगामी प्रयोग हेतु सतत प्रयत्नशील होंगे।

'संयुक्ता' का सातवां अंक जो ई पत्रिका के रूप में प्रकाशित हुआ उसकी भी असीम सराहना हुई है जो कि विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त उत्साहवर्धक पत्रों से विदित है। अंत में मैं आप सब से यही अनुरोध करूंगी कि इस पथ पर आप सब का साथ है तो ही हम निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर हैं। कहूं तो धन्यवाद शब्द आप सब के सहयोग के आगे छोटा पड़ता है। चलिए एक दूसरे का हाथ थाम हम सब संयुक्ता के आठवे अंक की ओर बढ़े और हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन सफर में सुनहरा इतिहास लिखें।

आप सभी के विचारों तथा सम्मतियों की प्रतीक्षा में ....।

गीता तनेजा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

पाठकों के पत्र

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'संयुक्ता' के सातवें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक एवं सराहनीय हैं । इनमें श्री संजीव जी की रचना मजदूर, भाग-1, भाग-2, श्री अनिल शर्मा जी की रचना कोई शक, सुश्री अनिता शर्मा की रचना अक्सर एवं श्री मनोज कुमार गौतम की रचना आशा, एक बार फिर आदि रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एव संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ ।

हिन्दी प्रभारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), ओडिशा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय की पत्रिका 'संयुक्ता' के सातवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका का संपादन सराहनीय है । पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएँ प्रशंसनीय हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है । कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है । पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादक मंडल को बधाई । पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), मध्य प्रदेश, भोपाल

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'संयुक्ता' के सप्तम अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष आभार । पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत मनोहारी है एवं पत्रिका की भाव-भूमि एवं इसमें समाहित सभी रचनाएँ प्रासंगिक हैं । पत्रिका में बाल कलाकारों द्वारा बनाए चित्र काफी आकर्षक हैं एवं बाल कलाकारों द्वारा लिखित रचनाएं भी सराहनीय हैं । पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा अनुभाग)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान

इस कार्यालय में हिन्दी पत्रिका 'संयुक्ता' का सातवां अंक प्राप्त हुआ है, तदहेतु धन्यवाद । पत्रिका का कलेवर, संयोजन, साज-सज्जा व संपादन सशक्त व प्रभावोत्पादक है । पत्रिका की बाहरी व भीतरी साज-सज्जा पत्रिका को विशिष्ट बना रहे हैं । पत्रिका में शामिल लेखों से यह दृष्टिगोचर होता है कि आपका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए किया गया कार्य सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेख व कविताएं उच्च कोटि की एवं संग्रहणीय हैं । लेखों का स्तर तो बढ़िया है ही । किसी भी रचना को कम आंकना, लेखक और उनके रचना का, मेरी समझ में तो अनादर होगा। कार्यालय में संपन्न अन्य गतिविधियों के चित्रों से यह ज्ञात होता है कि कार्यालय में सरकारी काम-काज के साथ कार्मिकों के स्वास्थ्य एवं मनोरंजन का भी विशेष ख्याल रखा जाता है।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई ।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा अनुभाग)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)- ।।, नागपुर, महाराष्ट्र

हिन्दी पत्रिका संयुक्ता के `सातवें` अंक की प्रति ई-मेल द्वारा प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय एवं रोचक हैं। `क्रोध में विवेक न खोयें, `कोई शक`, `औकात`, प्रिय उम्मीद फिर लौटोगे नहीं`, `कोरोना काल में बच्चों को मानसिक तनाव से बचाएं` एवं `मेड इन इंडिया` आदि रचनाएं विशेष रुप में सराहनीय एवं प्रेरणादायक है। संपादक मंडल रचनाओं के चयन में कुशलता एवं साहित्यिक समझ के लिए बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा, चण्डीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'संयुक्ता' का सातवां अंक प्राप्त हुआ । सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं । प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है ।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिन्दी प्रकोष्ठ

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखंड का कार्यालय

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रुप ही नही, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सम्भिलित सभी रचनाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भुमिका निभाएगी

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निंरतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

वरीय लेखा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा.एवं.ह.), बिहार, पटना

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'संयुक्ता' के सातवें अंक की प्राप्ति हुई है । पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं । पत्रिका के

सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी प्रकोष्ठ)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखंड का कार्यालय, राँची

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'संयुक्ता' के सातवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ बधाई एवं धन्यवाद । पत्रिका के इस अंक का कलेवर बेहद आकर्षक है। पत्रिका का मुखपृष्ठ और मुद्रण के साथ-साथ बच्चों की कलाकृतियां इस अंक को प्रभावी बनाने में सक्षम हैं। इस अंक में कई उत्कृष्ट पठनीय रचनाओं को संकलित किया गया है जिनमें मेड इन इंडिया, समय और मेहनत का फल, बंगाल, क्रोध में विवेक न खोएँ शीर्षक रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।राजभाषा हिन्दी के संवर्धन और प्रसार में यह पत्रिका निश्चित रूप से अग्रणी है । इसका भविष्य और उज्ज्वल हो, यही कामना है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को पुनः बधाई और शुभकामनाएँ ।

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार, पटना

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "संयुक्ता" के सातवें अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ति हुई। उक्त पत्रिका का मुख पृष्ठ व साज- सज्जा अतीव आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख व कविताएं ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण व संग्रहणीय है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई स्वीकार करें और आशा करते हैं कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार- प्रसार व हिन्दी को बढ़ावा देने में अपना योगदान अवश्य ही प्रदान करेगी तथा अन्य कार्यालयों को हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन के लिए प्रेरित करेगी। भविष्य में, पत्रिका के रंगीन पृष्टों एवं चित्रों के साथ और भी निखर कर आने की संभावनाएं व्याप्त हैं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'संयुक्ता' के सातवे अंक की एक प्रति साभार प्राप्त हुई। धन्यवाद। 'संयुक्ता' पत्रिका का आवरण पृष्ठ व अंतिम पृष्ठ में छायाचित्र भारत के प्राकृतिक, एतिहासिक व कलात्मक समृद्धि का प्रतीक है। पत्रिका का पृष्ठचयन, मुद्रण एवं संपादन अत्यंत सराहनीय है। प्रत्येक रचनाओं से कुछ न कुछ रोचक जानकारी, ज्ञानवर्धक विषय, मन को छूने वाले भाव एवं सीख मिलती है। इस हेतु पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं के लिए रचनाकारों को विशेष बधाई एवं संपादक को शुभकामनाएँ।

'गिरनार' पत्रिका परिवार आपकी पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है और आशा करता है कि इसी तरह राजभाषा के प्रचार-प्रसार में आपकी पत्रिका सतत योगदान देती रहेगी।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) गुजरात, राजकोट

आलेख

कहानियाँ

एवं

कविताएँ

श्री नवीन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़

रंगोली

एक ऐसी रंगोली दे भगवन,
वो हंसी ठिठोली दे भगवन,
किलकाता हर मन हो ऐसी
बचपन टोली दे भगवन।।
क्यों बचपन कूड़ा बीन रहा
ये कैसा धर्म और दीन रहा
कोई सोता है वो रोता है,
जब भूख से व्याकुल होता है
वो ओढ़नी जिसमें दूध मिले,
हर सर वो चोली दे भगवन।
एक ऐसी रंगोली दे भगवन।।
सुनते है आज दिवाली है,
पर उसका पेट क्यों खाली है।
उम्मीदों भूख का पहरा है,
हर सपना ठहरा ठहरा है,
सपनों में उम्मीद का रंग भरे
बस ऐसी होली दे भगवन।।
एक ऐसी रंगोली दे भगवन।।

श्री नवीन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़

कामवाली

- भाई, माँ कुछ दिनों के लिए तुम्हारे पास आना चाहती है । कहती है रज्जू से मिले बहुत दिन हो गए हैं...
- अरे सुनील, लगता है माँ का दिमाग बुढापे में खराब हो गया है । उनको पता तो है कि आजकल रज्जू के पेपर चल रहे हैं। फिर भी...नहीं सुनील, तुम जो मर्ज़ी बहाना लगा दो पर माँ को अभी अपने पास ही रखो..
- पर भाई .....
- पर वर कुछ नहीं। तुम्हें तो पता है ना कि रज्जू की पढ़ाई के लिए हम कितने चिंतित हैं ... ठीक है...बाकी बातें फिर कभी..माँ को तुम संभाल लो..जो मर्ज़ी बहाना बना दो..ओके बाय.. रखता हूँ फ़ोन..

  फ़ोन की बीप काफी देर तक उसके कानों में बजती रही ।

  कुछ दिनों के बाद....
- हेलो सुनील..
- हाँ भाई..कैसे हो ?
- अरे सुनील, माँ को इधर भेज देना कुछ दिनों के लिए..
- वो तो ठीक है भाई...पर अभी तो रज्जू के पेपर चल रहे होंगे....
- सुनील..क्या है कि आजकल तुम्हारी भाभी की तबियत ठीक नहीं है..डॉक्टर ने काम के लिए मना किया है.. माँ आ जायेगी तो तुम्हारी भाभी जल्दी ठीक हो जायेगी...और रज्जू भी ठीक ढंग से पढ़ लेगा..तुम कल ही माँ को भेज देना..

फ़ोन अब भी बंद हो गया था पर अब उसके कानो में बीप की आवाज़ नहीं आ रही थी क्योंकि उसका ध्यान तो उस माँ की तरफ था जो सब कुछ सुन-समझकर अपने कपड़े पैक करने में लग गई थी...रज्जू से मिलना जो था..चाहे कामवाली बन कर ही सही......

श्री मुनीष भाटिया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा,
चण्डीगढ़

अपना-पराया

किस से कहूँ व्यथा खुद की
मौन हृदय के सभी द्वंद्व हैं
समझा जिसे जितना भी अपना
ठगा उतनी ही बार गया !

बनाता हर कोई रिश्ता यहां
बस खुदगर्ज़ी की खातिर ही
सोचकर यही कि ना जाने
कब किससे क्या काम पड़ जाए !

डिजिटल से हो गये रिश्ते सभी
फेसबुक वॉट्सएप्प के गुलाम हैं
जज़्बातों के सौदागर हैं सब यहां
रुख़ हवा का जो खूब समझते हैं !

अपना पराया रहा नहीं अब तो
जंग महज़ रिवाज़ों से है
हाथ ना थामेगा इस दौर में कोई
महफ़ूज खुद ही अब रहना है !

श्रीमती दीपशिखा पुंज

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
का.महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

योग भगाए रोग

आज योग शब्द स्वस्थ शरीर का मूलमंत्र है। योग शब्द का अर्थ है संपूर्ण संपर्क यानि स्वयं से पूर्ण रूप से जुड़े रहना या स्वयं को समझना। एक आध्यात्मिक व्यक्ति के लिए योग का अर्थ है — ईश्वर से स्वयं का तारतम्य बिठाना और इसके लिए वह अपना पूरा ध्यान, समय और ऊर्जा ईश्वर पर ध्यान केंद्रित करने के लिए लगाता है।

समत्वं योग उच्चयते — गीता की यह यौगिक परिभाषा बड़ी सारगर्भित है। जिसका अर्थ है कि जहां संतुलन है, सांमजस्य है, लयबद्धता है — वहां योग है। इसके विपरीत जहां द्वंद्व है, असंतुलन है, विग्रह है — वहां रोग है, व्याधि है।

योगी सच्चे अर्थ में स्वस्थ अपने में स्थित होता है। रोगी इसके विपरीत अपने आप में स्थित नहीं होता। योग का किसी भी तरह रोग से मेल नहीं बैठता, अतः योग पद्धति पर चलने वाला स्वस्थ और रोगमुक्त होना ही चाहिए। योग पद्धति जीवन की ऐसी कला है जो व्याधि से मुक्ति दिला कर समाधि की ओर ले जाती है।

आष्टांग योग के आठों अंग — यम, नियम, आसन, प्राणयाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि समस्त शारीरिक मानसिक रोगों से मुक्त करने में अति सक्षम हैं। यम व्यक्ति और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने वाले मौलिक नियम हैं। यम पाँच हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय दूसरे का हक न हड़पना, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ज़रूरत से ज्यादा संग्रह न करना।

नियम भी पाँच हैं — शौच आंतरिक व बाह्य शुद्धता, संतोष, तप श्रम और साधना, स्वाध्याय अध्ययन व मनन और ईश्वर प्राणिधान ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण। ये सब अपने आपको शुद्ध रखने के नियम हैं। इनका थोड़ा-थोड़ा अभ्यास भी हमें व्याधि से दूर व समाधि की ओर ले जाएगा।

आसन, प्राणायाम और रोग योगासन इस शरीर और मन रूपी वीणा को संतुलित और लयबद्ध रखने में बहुत कारगर हैं। कोई और व्यायाम इस दृष्टि से इनका मुकाबला नहीं कर सकता। शारीरिक, मानसिक बिमारियां चार तरह के तनावों से पैदा होती हैं। हड्डी और मांसपेशियों के तनाव, आमाशय के तनाव, मानसिक तनाव और ग्रंथियों में असाधारण तनाव। आसन और प्राणायाम इन सभी तनावों को दूर करते हैं। ये हमारे बाहरी अंगों से अधिक हमारे आंतरिक अंगों को प्रभावित करते हैं। हमारे शरीर के अंदर हज़ारों नसों और नाड़ियों का जाल है। योगासन इन नस-नाड़ियों और ग्रंथियों पर गहरा प्रभाव डालकर हमारे शरीर और मन को शुद्ध और स्वस्थ रखते हैं। स्थिरम् सुखम् आसनम् अर्थात् आसन हमारे मन और शरीर में स्थिरता लाते हैं एवं सुख की भावना जगाते हैं। मानसिक तनाव दूर करने में शवासन का विशेष महत्व है। प्राणायाम — शरीर का आधार प्राण हैं। प्राण की कमी से हमें कमज़ोरी महसूस होती है। हमारे फेफड़े एक ही मिनट में सारे शरीर का रक्त शुद्ध कर देते हैं, इस प्रकार चौबीस घंटों में लगभग आठ टन रक्त शुद्ध करते हैं। यदि प्राणायाम करते रहें तो ऑक्सीजन का संचार शरीर में भली प्रकार से हो पाएगा। कोरोना काल में प्राणायाम और ऑक्सीजन का महत्व भली भांति उजागर हुआ है। प्राणायाम से शरीर में व्याप्त प्राणों व उपरी प्राणों का संतुलन बना रहता है, मन शांत रहता है, संस्थान सक्रिय रहते हैं, स्मरण शक्ति बढ़ती है और हम स्वस्थ होते हैं। नाड़ी शोधन, भस्त्रिका, शीतली, चंद्रभेदी, सूर्यभेदी, उज्जयी और भ्रामरी प्राणायाम बहुत उपयोगी हैं।

ध्यान और रोग — कई मानसिक रोग अवचेतन तथा अचेतन मन में दमित आकांक्षाओं के कारण होते हैं। कई बार हमारे मन में कुछ विचार उठते हैं जिन्हें चेतन मन इसलिए दबा देता है कि उनकी अभिव्यक्ति की स्वीकृति समाज नहीं देता। इन दमित इच्छाओं के कारण ही मानसिक रोग हो सकते हैं। न्यूरोसिस, डिप्रैशन, हिस्टीरिया इत्यादि रोगों को यौगिक क्रियाओं खासकर ध्यान द्वारा दूर कर सकते हैं। पतंजलि योगसूत्र में लिखा है कि प्राणायाम के सतत् अभ्यास से पूर्व जन्म के संस्कार और वासनाएं भी नष्ट हो जाती हैं।

पिछले पंद्रह वर्षों में ध्यान पर काफी वैज्ञानिक छानबीन की गई है। परीक्षणों में पाया गया है कि ध्यान की अवस्था में हमारे शरीर और मन में कई क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं जैसे मस्तिष्क में अल्फा तरंगों का उठना और शांति व आनंद का अनुभव होना। अल्फा तरंग जब उठती है तब मस्तिष्क शांत निष्क्रिय तटस्थ और तनावमुक्त होता है। आंतरिक कुंभक सांस को अंदर रोकने से तथा त्राटक किसी वस्तु को देर तक अपलक देखने से भी अल्फा तरंगें पैदा होती हैं। सारांश यह है कि अष्टांग योग के ये सभी आठों अंग मनुष्य को समस्त शारीरिक तथा मानसिक रोगों से मुक्त रखने में सक्षम हैं। यह आध्यात्मिक उपचार पर भी काम करता है। अष्टांग योग का अभ्यास करने से आप अपने आसपास सकारात्मकता और उर्जा को महसूस करेंगें।

श्रीमती अलका चोपड़ा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

का.महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

औरत हूँ मैं

औरत हूँ मैं
चुप रहूँ मैं, सब सहूँ मैं
बोलूँ तो बदतमीज़ हूँ मैं
औरत हूँ मैं

घूँघट करूँ मैं, सर झुकाऊँ मैं
देखे कोई और तो बदचलन हूँ मैं
औरत हूँ मैं

पराए घर की मैं, पराए घर में मैं
घर से बेघर हूँ मैं
औरत हूँ मैं

पढ़ी-लिखी मैं, समझदार मैं
पेशे से गृहिणी हूँ मैं
औरत हूँ मैं

बेटी मैं, पत्नी मैं
बात हक की तो
सिर्फ़ औरत हूँ मैं
औरत हूँ मैं

श्री सुदेश कुमार
सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़

अस्तित्व

स्त्री न पुरुषों से ज़्यादा बुद्धिमान है, न ज़्यादा प्रतिभाशाली, न ज़्यादा मजबूत, न ज़्यादा रचनात्मक, न ज़्यादा ज़िम्मेदार । स्त्री पुरुषों से बेहतर नहीं है लेकिन स्त्री पुरुषों से कमतर भी नहीं है । स्त्री और पुरुष दोनों बराबर हैं । अमेरिकन लेखिका वेरा नाजेरियन की लिखी ये पंक्तियाँ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम पर बिलकुल मुफीद हैं । महिला दिवस मनाते हुए नारी अस्तित्व एवं असमिता को सुरक्षा देने की बात की जाती है क्योंकि उसे दिन-प्रतिदिन उपेक्षा एवं तिरस्कार का सामना करना पड़ता है ।

महिलाओं के प्रति एक अलग तरह का नज़रिया इन सालों में बनने लगा है । सरकार ने नारी के संपूर्ण विकास की संकल्पना को प्रस्तुत करते हुए अनेक योजनाएँ लागू की हैं जिनमें अब नारी के सशक्तिकरण और सुरक्षा के अलावा और भी कई आयाम जोड़े गए हैं । सबसे अच्छी बात यह है कि समाज की तरक्की में महिलाओं की भूमिका को आत्मसात किया जाने लगा है । आज भी आधी से अधिक महिला समाज को पुरुषवादी सोच के तहत बहुत से हकों से वंचित किया जा रहा है, शायद इसलिए सरकारी योजनाओं में महिलाओं की भूमिका को अलग से चिन्हित किया जाने लगा है ।

भारतीय समाज में आई सामाजिक कुरीतियाँ, जैसे सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा और हमारी परंपरागत रुढ़िवादिता से कमज़ोर होने के बजाए एक ऐसा सेतु बने जो टूटते हुए को जोड़ सके, रुकते हुए को मोड़ सके और गिरते हुए को उठा सके । भारतीय नारी को आज आत्ममंथन, आत्मचिंतन और स्वविवेचन की जरूरत है । आधुनिकता और पुरुष से बराबरी के नाम पर नारी आज पटरी से उतरी हुई है । उन्हें खुद को पटरी पर लाना होगा और शीर्ष का परचम लहराना होगा । आखिर में हम पुरुषों को भी हृदय से आह्वान करते हैं कि नारी सम्मान के संरक्षणार्थ वे भी अपनी सोच में सकारात्मक बदलाव लाएँ । हम उनके अभिन्न सहयोगी और उन्हीं के हिस्से हैं ।

श्री योगेश कुमार मिश्र
वरिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़

जीवन के नाटक में मंच के नाटक का योगदान

हम सबके जीवन मे अभिनय का महत्व ऐसा है मानो चन्दन और पानी का साथ हो। हम जीवन के रंगमंच पर किसी अज्ञात सूत्रधार के और निर्देशक के इशारों पर ही तो नाच रहे हैं। कभी पुत्र, कभी पिता, कभी पति की भूमिका में हम अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं । हमारे जीवन का अभिनय इतना वास्तविक और जीवंत है कि हम इसे सच मान कर बाहर-भीतर एक रस मान कर चल रहे हैं । मेरे जीवन में वास्तविक रंगमंच के इतर भी रंगमंच रहा है, जिसकी भूमिका का असर मेरे व्यक्तित्व और अस्तित्व पर बराबर पड़ा है।

बात उन दिनों की है जब हमारे गांव में बिजली नहीं थी। ऐसी बात भी नहीं थी कि गांव में इसके पहले बिजली नहीं थी । वह जगन्नाथ मिश्र जी का समय रहा होगा क्योंकि ट्रांसफार्मर, बिजली के तार और सीमेंटेड खम्भे थे । वह ज़रूर बिजली के होने के सूचक थे। मैंने होश बाबरी ध्वंस के समय संभाला था । उसके बाद बिहार के लालू जी ने लालटेन के महत्व को रेखांकित करते हुए बिजली गुल कर दी। मैं विशुद्ध लालटेन युग का प्राणी था। हमारे यहाँ दुर्गापूजा, दीपावली और सरस्वती पूजा में नाटक हुआ करता था। इन तीनों पर्वों के नाटक मेरे गांव के आस-पास के अलग-अलग गांवों में होते थे। मेरा गांव बहुत छोटा था, यहाँ कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं होता था।

मैं बचपन से ही अभिनय में रुचि लेता था। मेरे पिता जी मंझे हुए अभिनेता रहे हैं। बड़े भैया और मंझले भैया भी नाटक करते आये हैं। इन सब के बीच मेरे मन मे भी अंकुर फूट पड़ा। अपनी टोली को लेकर मैंने भी बीड़ा उठाया । मैंने पहली स्क्रिप्ट शायद 8 वर्ष की उम्र में लिखी, मैं ही निर्देशक, मुख्य अभिनेता, संचालक, व्यवस्थापक सब था । मेकअप भी खुद ही करता था..साड़ी पहनाने से लेकर इंस्पेक्टर के ड्रेस हों या डाकू के सब पर बारीकी से काम करता। रिहर्सल पुरज़ोर चलता, ढोलक, बैंजो, फिल्मी गीत सब पिरोया जाता और अंत में सुखद नाटक का मंचन होता। कमी दर्शकों की रहती थी क्योंकि हम उसी समय नाटक खेलते थे जब बड़े लोगों का नाटक चल रहा होता था ऐसे में हमें कोई भाव नहीं मिलता था।

चन्दा मिलता नहीं था, ऊपर से रात को नाटक करने के लिए पंचलाइट (पेट्रोमैक्स) बड़ी मुश्किल से मिलता...वह भी छिन गया तो दो लालटेनों की व्यवस्था होती । वह भी छिन गया तो हमलोग ढिबरी

पर नाटक खेलने लगे...ढिबरी में मिट्टी का तेल कहाँ से आए ? उस गरीबी में कोई पैसे नहीं देता था, तब हम मिट्टी तेल का चन्दा मांगते। बड़ा कष्ट था...घर से चुराकर कुछ व्यवस्था करता । मेकअप के लिए दीदी का पाउडर क्रीम ले कर भाग जाता...ओह वे मुफलिसी के दिन...ऐसे ही करते करते बिना दर्शकों के हम नाटक खेलते गए..उपेक्षित, असहाय से...लोग बहुत मज़ाक उड़ाते...दूसरे का क्या कहा जाए, घर वाले उपहास उड़ाते । सबकी नज़रों से बचाकर नाटक लिखते, जंगल में अभ्यास करते ।

सबसे खराब तब लगता जब हमारे बीच में से कम उम्र का सुंदर लड़का, लड़की का रोल करता तो गांव के छिछोरे उसे छेड़ने लगते...इधर-उधर हाथ लगा देते । यह भयवाह था...सब ताने मारते कि "पंडी जी के औ कोई काम नहीं है का जी".... खैर, यह सब सिलसिला चलता रहा और विराम तब लगा जब मैं पढ़ाई के लिए जोधपुर चला गया । लेकिन लौटा तो दुगने उत्साह के साथ, नई तकनीक के साथ और इस बार जबर नाटक किया गया...इस बार स्क्रिप्ट लिखी नहीं गयी, शोले का रिमेक बनाया गया।

ऐसा जीवन्त बना कि जो लड़का गब्बर बना उसके बड़े भाई ने ठाकुर बने लड़के की हत्या रियल लाइफ में की । बाद में गब्बर (शम्भू) ने भी आत्म हत्या कर ली । ठाकुर का छोटा भाई भरी जवानी में बीमारी से मरा । बस जय वीरू और बसंती और रमेश सिप्पी (योगेश) बचे हुए हैं।

इसी नाटक में मैंने फिलर के रुप में एक शिक्षा पर गीत बनाया था। जब अनपढ़ बाप बन कर नाटक के ब्रेक में मैं मंच पर बूढा बन कर आया तो लोग भौचक्के रह गए कि यह कौन है ? अंत तक नहीं पता चला, बताने पर भी लोगों को विश्वास नहीं हुआ।

वह नाटक इतना हिट हुआ कि उसके बाद भीड़ हमारे अड्डे पर होने लगी, दूर दूर से लोग आने लगे । नाटक का सिलसिला काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भी जारी रहा और 2005 से मेरे नाटक को प्रथम स्थान मिला, 2006 में बेस्ट एक्टर, हास्य प्रहसन को द्वितीय, फिर पुरस्कारों और मेरे प्रयासों को पर्याय माना जाने लगा ।

मेरा साहस इतना बढ़ गया कि एक वारिस अली थे, वे नाटक का 'न' भी नहीं जानते थे...लोगों को देख कर उनकी आवाज़ दब जाती थी, उन्हें सीधे मैंने अंतर संस्थान युवा महोत्सव के मंच पर उतार दिया और वे बेहतरीन अभिनय करके लौटे। उस नाटक को भी द्वितीय पुरस्कार मिला।

इस तरह से सफलता मिलती गयी । कुछ स्थानों पर असफलता भी मिली । सबके अनुभव आगे की कड़ियों मे काम आते गए। सरकारी सेवा मे आने के पश्चात भी नाटक का दौर बदस्तूर चलता रहा । कोलकाता में श्रुत नाटक करने के दौरान उसमें भी कई अनुप्रयोग चले । सबसे यादगार रहा जब मैंने कर्ण की भूमिका का निर्वहन किया । उन दिनों से आज तक उन सबकी यादें जीवंत हैं ।

श्री योगेश कुमार मिश्र
वरिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़

जीवन और तुम

एक

जीवन क्या है, बुलबुला सा
अभी पैदा ही हुआ हो मानो
अपने चरम की ओर जाता
फूटने को बेकरार और अंत ..
यही है न जीवन
इसी में कितनी लड़ाई
मन मुटाव, तकलीफ
आँसू खुशी के, कभी सिसकियों के
बस यही है
घूमना गोल
एक वृत पर एक चक्कर
और जीवन का अंत
और यह अंत देता है
नए जीवन को उद्गम

दो

तुम वह दीपक तले अंधेरा हो
जिसे ताने हज़ार दिए जाते हैं
लेकिन उस अंधेरे में कोई जुगनू
अपनी रौशनी से कुछ देर करता है उजाला
उसके उजाले को दीपक का प्रकाश नहीं
उसके आस-पास का अंधेरा चाहिए
उसमें उजाला है, प्रेम है, सौंदर्य है
पर उसके बोध को
थोड़ा तमस, थोड़ा असत्य
थोड़ा बनावटीपन चाहिए
सफ़ेद झूठ मीठा है
नग्न सत्य विद्रुप, कड़वा और तकलीफदेह है।
तुम केवल मेरे हो
और मैं 'केवल तुम्हारा ही' में जो
रस और भीनी-भीनी खुशबू है
वह इस सत्य में कहाँ कि
दिल धड़कता बार-बार
हर बार अलग लोगों के लिये
मनुहार लड़ाई शिकवे गिले...
सब झूठ हैं पर लज़ीज़ हैं।
सत्य नीम है, करेला है, हितकर है।
अंधेरा ढँकता है सत्य को
दीपक नग्न करता है बदसूरती को।
इस वजह से तुम दीपक तले अंधेरा हो
असत्य हो, मीठे हो, सुस्वादु हो
हाँ, हानिकारक तो हो ही !

कार्यालयीन गतिविधियाँ — वर्ष 2020-21

कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने एवं समीक्षा हेतु हर तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की जाती है। कार्यालय के सभी समूह अधिकारी एवं शाखा अधिकारी राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य हैं। समिति के अध्यक्ष महानिदेशक तथा उपाध्यक्ष निदेशक प्रशासन हैं।

हिन्दी पखवाड़ा

कोरोना काल को देखते हुए गत वर्षों से बिल्कुल अलग रुप में इस वर्ष का हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इसके अंतर्गत प्रतिभागियों की संख्या सीमित रखते हुए हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन सीमितताओं के बावजूद प्रतिभागियों का हिन्दी के प्रति प्रेम व उत्साह किसी प्रकार से कम नहीं था। प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के उत्साहपूर्ण भागीदारी रही। हिन्दी पखवाड़े के समापन पर पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

कार्यालय मे दिनांक 27.10.2020 से 02.11.2020 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया जिसके लिए सप्ताह के प्रथम दिवस दिनांक 27.10.2020 को अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा शपथ ग्रहण की गई। सप्ताह के दौरान कार्यालय में निबंध प्रतियोगिता एवं प्रश्न-मंच का आयोजन किया गया। दोनों प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी रही।

खेल समाचार

इस कार्यालय के बैडमिंटन खिलाड़ी श्री पंकज नैथानी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक ने 35+ पुरुष एकल कैटेगरी के अंतर्गत सितंवर, 2021 में गोवा में आयोजित अखिल भारतीय मास्टर्ज़ रैकिंग टूर्नामेंट में रजत पदक प्राप्त किया तथा चयनित होकर नवम्बर, 2021 में स्पेन में आयोजित की गई विश्व मास्टर्ज़ चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। कार्यालय के एक अन्य बैडमिंटन खिलाड़ी श्री दीपक सक्सेना, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने पुरुष एकल कैटेगरी के अंतर्गत सितंवर, 2021 में गोवा में आयोजित अखिल भारतीय मास्टर्ज़ रैकिंग टूर्नामेंट में कांस्य पदक प्राप्त किया तथा चयनित होकर नवम्बर, 2021 में स्पेन में आयोजित की गई बी.डब्ल्यू.एफ. विश्व मास्टर्ज़ चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

फोटो गैलरी

कार्यालय प्रधान निदेशक
लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) चण्डीगढ़
हिन्दी परवाड़ा समारोह
दिनांक 14-9-2020 से 28-9-2020

फोटो गैलरी

फोटो गैलरी

फोटो गैलरी

फोटो गैलरी

ALL INDIA MASTERS
RANKING BADMINTON TOURNAMENT 2021
SELECTIONS FOR BWF WORLD SENIORS CHAMPIONSHIPS IN SPAIN
ORGANISED BY
GOA BADMINTON ASSOCIATION
UNDER THE AEGIS OF
DMINTON ASSOCIATION OF INDIA
SEP 19 TO 26, 2021 AT MANOHAR PARRIKAR
INDOOR STADIUM, NAVELIM, SALCETE - GOA
WWW.BADMINTONINDIA.ORG
GOABADMINTON
YONEX
SUNRISE
Passion For Excellence
SLS

ALL INDIA MASTERS
KING BADMINTON TOURNAMEN
SELECTIONS FOR BWF WORLD SENIORS CHAMPIONSHIPS IN
GOA BADMINT
ASSOCIATION
BADMINTON
ON OF INDIA
PARRIKAR
ALCETE - GOA
WWW.BADMINTONINDIA.ORG
GOABADMINTO
YONEX
SLS

श्री सोनु कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा,
चंडीगढ़

समाज

मानव एक सामाजिक प्राणी है। मानव ने अपने अनेक प्रयासों से जिदंगी को आरामदायक बना दिया है। आज एक जगह से दूसरी जगह जाना अत्यंत सुगम हो गया है। इंटरनेट पर मीलों दूर बैठे व्यक्ति से बात हो जाती है। सोशल मीडिया ने पूरी दुनियां को एक प्लेटफार्म पर ला दिया है। मानव ने जीवन में खूब प्रगति कर ली है परन्तु आज के आधुनिक युग में स्वार्थ बढ़ने के कारण रिश्ते गौण हो गए हैं। आज सारा संसार भावना शून्य हो गया है और सब आपाधापी में लगे हुए हैं। जीवन की इस अंधाधुंध दौड़ में मानव रिश्ते तार-तार हो रहे हैं। इंटरनेट ने मानव जीवन में बहुत बदलाव कर दिए हैं परन्तु इसके अधिक उपयोग होने के कारण मानव जीवन मूल्यों का ह्रास हुआ है। आज के इस आपाधापी में मानव ने सामाजिक रिश्ते खत्म कर लिए हैं। आज एकाकी परिवार होने के कारण सामाजिक ताने-बाने में बहुत कमी आई है। राजनीति के ओछेपन की वजह से जातिगत, साम्प्रदायिक हिंसा को बढ़ावा मिल रहा है। मानव जीवन को बचाने के लिए सामाजिक रिश्तों का प्रगाढ़ होना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम सही मायनों में देश की प्रगति चाहते हैं तो हमें जातिगत, साम्प्रदायिक भावनाओं से ऊपर उठकर राष्ट्र की अखण्डता और एकता के लिए कार्य करना होगा। विश्व की विध्वंसकारी ताकतों ने पड़ोसी राष्ट्रों को दुश्मन बना दिया है। हथियारों के सौदागरों ने देश की सीमाओं पर भय का माहौल पैदा किया हुआ है। आज पूरे विश्व में शान्ति बहाली के लिए हमें एक होना पड़ेगा तभी सही मायनों में विश्व की प्रगति संभव है। मानव जीवन कितने ही प्रगति के सोपान चढ़ जाए परन्तु बिना समाज के प्रगति अधूरी है। हमारे देश में सबसे ज़्यादा आय का असंतुलन है, यहाँ पर दस फीसदी लोगों के पास राष्ट्रीय आय का सत्तावन फीसदी है और नीचे के पचास फीसदी लोगों के पास राष्ट्रीय आय का सिर्फ़ तेरह फीसदी है। आय के असंतुलन और युवाओं में बढ़ती बेरोज़गारी भविष्य में कई नई समस्याओं को जन्म दे सकती है। आज हमें समाज के हरेक वर्ग को कंधे से कंधा मिलाते हुए देश की प्रगति के बारे में सोचना चाहिए। समाज का कोई भी वर्ग यदि देश की प्रगति से अछूता है तो सही मायनों में देश की प्रगति नहीं मानी जा सकती है।

श्री रमेश कुमार खटकड़
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

नारी तू महान है

हे नारी तू महान है
तूने ही सबको जीवन दिया
तूने सबका पोषण किया
सबको तुम पर अभिमान है
हे नारी तू महान है
सदियों पहले तू थी पूज्य
तेरे बिन न हो पाता यज्ञ
तेरा था सर्वत्र सम्मान
न करता था कोई अपमान
थी नारी तू बड़ी महान
मध्य युग आए मुगल
नारी के नाश का बजा बिगुल
नारी बन कर रह गई एक खिलौना
बाहर निकलना हुआ मना
रहने लगी शिक्षा से वंचित
फिर भी नारी नहीं हुई पराजित
परिस्थिति का डटकर किया सामना
नारी की पूरी हुई मनोकामना
आज नारी ने बढ़ना सीखा
अपने हक के लिए लड़ना सीखा
न दोहराने देगी फिर वही कहानी
जिसके लिए नारी ने दी कुर्बानी
आज सब क्षेत्र में नारी है
पर न किसी के लिए बाहरी है
पुनः अर्जित किया मान-सम्मान
देश पर उसने की जान कुर्बान
नारी है बड़ी महान
सबको उसपर है अभिमान
आओ सब मिलकर करें नारी का सम्मान
और अपने देश को बनाए और महान

सुश्री रिया खटकड़
सुपुत्री श्री रमेश खटकड़ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

माता-पिता

पापा की मैं बड़ी लाडली, मम्मी की मैं जैसे जान
दिल नादान मगर हरदम रखती सबका ध्यान
पापा मेरे हैं दुनिया में सबसे बेस्ट
मेहनत इतनी करते हैं, जैसे चढ़ना हो ऐवरेस्ट

पापा का तो प्यार अनोखा, जैसे शीतल हवा का झोंका
माँ की ममता सबसे प्यारी, सबसे सुंदर, सबसे न्यारी
मां ममता की धरा है, पिता जीने का सहारा है
माता-पिता का साथ कभी न छोड़ना
दिल उनका भूलकर भी न तोड़ना

शिक्षक बन तुम्हें पढ़ाया, दर्द सहते हुए भी तुम्हें हँसाया
तुम इस ओहदे पर पहुँचे हो, तुम्हें इस काबिल बनाया
माता-पिता का कभी साथ न छोड़ना
दिल उनका भूलकर भी न तोड़ना ।

श्री मुनीश भाटिया
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा,
चंडीगढ़

बेलगाम लश्कर तैयार करने में प्रयासरत सोशल मीडिया

आधुनिक समाज में तेजी से अपना असर करता सोशल मीडिया समाज में धार्मिक कट्टरवाद व राष्ट्रविरोध का एक बेलगाम लश्कर तैयार करने में लगा हुआ है । समाज में राष्ट्र विरोधी शक्तियां मौके की नज़ाकत का लाभ उठाकर किसी भी क्षण समाज के माहौल को बिगाड़ने का दम रखे हुए है । जानबूझकर किया जाने वाला कृत्य देश की आन्तरिक शक्तियों की तरफ से हो या फिर विदेशी ताकतों के माध्यम से हो रहा हो पर इसको हवा देने का कार्य सत्ता लोलुपता के गणित में उलझी राष्ट्र विरोधी के हाथ से इनकार नहीं किया जा सकता ।

समाज में इस तरह का वातावरण तैयार किया जा रहा है जिसमें देशद्रोह की पोस्ट का इस्तेमाल समाज में आग लगाने के लिए किया जा रहा है और अफ़सोस यह कि इन पोस्ट के समर्थन करने वालों का एक वर्ग भी अचानक से प्रकट हो जाता है और बिना सोचे समझे आग में घी डालने के कार्य को अंजाम देने में जुट जाता है । आज हालात ऐसे हो गए हैं कि किसी व्यक्ति विशेष के पक्षधर स्वयं को राष्ट्र भक्त और दूसरे उसके विरोध के सुर में इस कदर अंधे हो गए हैं कि उस व्यक्ति विशेष का विरोध करते-करते राष्ट्र विरोधी बयानबाजी में उतर जाते हैं । उनकी इस लच्छेदार बयानों को खूब वायरल किया जाता है और अंततः यही पोस्ट विकृत रूप धारण कर देश में राष्ट्र भक्त और राष्ट्र विरोधी स्वयंभू गुट तैयार हो गए हैं जो एक हल्की सी चिंगारी मात्र से पूरे समाज को राख करने के लिए असलाह-बारूद लिए भाड़े के पत्थरबाजों के साथ हरदम समाज में सक्रिय रहते हैं । यह समाज में नैतिक दिवालिएपन का ही परिणाम है कि समाज में संयम समाप्त हो रहा है । विभिन्न राजनैतिक पार्टियों द्वारा मीम्स बनाने का चलन भी सोशल मीडिया में अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा हैं । पिछले दिनों महाराष्ट्र के एक राजनैतिक दल द्वारा उनके कद्दावर नेता का मीम बनाकर फॉरवर्ड करने की सज़ा उस राजनैतिक दल द्वारा किस तरह

से सार्वजानिक रूप से दी गयी ये किसी से छिपी नहीं है।इक तुच्छ सी पोस्ट की चिंगारी समाज में हिंसा की आग से भाईचारे को राख करने की शक्ति खुद में समाये होती है ।

फेक न्यूज़ एक दावानल की भाँति पूरे समाज में किस तरह की आग समाज में फैला रही है इसका ज्वलंत उदाहरण बीते दिनों बंगलौर और दिल्ली दंगों में सोशल मीडिया की इन पोस्ट द्वारा निभाई गई भूमिका से भी मिलता है । हालांकि इन घटनाओं के बाद वेबसाइट और प्राइवेट सोशल मीडिया अकाउंट को सरकार द्वारा त्वरित प्रभाव से प्रतिबंधित भी किया गया लेकिन राष्ट्रविरोधी ताकतें फिर किसी दूसरे नाम से सोशल मीडिया में अवतरित हो गयी।अधिकतर दंगों में स्लीपर सेल द्वारा फैलाई जा रही नफ़रतों के पैगाम ही हैं जो सोशल मीडिया के माध्यम से घर-घर पहुंचाये जा रहे है। इन घातक सोशल मीडिया की घातक पोस्ट का असर छोटे-छोटे कस्बे व गांव में व्यापक रूप से देखने को मिलता है। यह दूरस्थ कस्बे इंटरनेट की पहुँच से समाज में इन ज़हरीली पोस्ट के माध्यम से वैमनस्यता के केंद्र बनते जा रहे है । पालघर में साधुओं की निर्मम हत्या की जांच में इन्हीं सोशल मीडिया की विषैली पोस्ट का ही परिणाम बताया जाता है । भारत का समाज जो कि पहले से ही जातिगत एवं धार्मिक समीकरणों में विभाजित है वहां किसी भी धार्मिक या जातिविशेष की टिप्पणी पर बनी पोस्ट माहौल बड़ी सरलता से बिगाड़ देती है।

आज का बेलगाम सोशल मीडिया समाज में प्रत्येक वर्ग के लोगों में कुत्सित भावनाएं भड़काने के साथ-साथ एक भ्रष्ट वातावरण उत्पन्न कर रहा हैं। अपनी उदंडता को सफेद जामा पहनाने के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे कुतर्कों का सहारा लिया जा रहा है। लेकिन यह भी विचारणीय है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मतलब ये नहीं कि कुछ भी बिना सोचे समझे और उसके घातक परिणामों का विश्लेषण किए बिना उस पोस्ट को फॉरवर्ड कर दिया जाए। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर लोगों की निजता भी सुरक्षित नहीं रही। इस बार अदालत ने भी इस मामले में स्वतः संज्ञान लिया है और चिंता ज़ाहिर की है । स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति में संतुलन आवश्यक है । किसी की अभिव्यक्ति की सीमा वहीं तक है जब तक कि वह दूसरे की स्वतंत्रता का हनन नहीं करती अन्यथा तो वह उद्दंडता कहलाती है । आज के समय में ऐसी तकनीक विकसित करनी चाहिए जिससे कि इंटरनेट द्वारा फैलाए जा रहे जातिवाद और धार्मिक कट्टरवाद की उद्दंडता और ज़हर के प्रचार-प्रसार पर रोक लगाई जा सके।घिनोने सन्देश की शुरुआत के उद्गम स्थल की जांच के सम्बन्ध में ऐसी व्यवस्था स्थापित करनी चाहिए कि ऐसे शरारती तत्वों की सीधी पकड़ सरकार द्वारा होनी चाहिए ।

भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष देश में लोगों का यह दायित्व बनता है कि खुद की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर दूसरे धर्म और जाति के लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता का हनन नहीं होना चाहिए ।विश्व के विविधा संपन्न महान भारत देश में जहाँ आलोचना और विरोध जनतंत्र का आधार है वहां अन्य धर्मों और जाति के लोगों की आलोचना संयम और अनुशासन के दायरे में होनी चाहिए ताकि सभी लोग अमन चैन

के साथ देश में रह सकें ।समाज व राष्ट्र के विरोधी सोशल मीडिया पर घिनोनी हरकतों से अपने परिवार को तो धोखा देते ही हैं साथ ही समाज के लिए बोझ सिद्ध होते हैं। अतः आज यह अवश्यंभावी हो गया है कि समाज के इस विष के विस्तार पर अंकुश लगाया जाए। स्वतंत्रता के नाम पर आज जो ज़हर घोला जा रहा है उसे और अधिक फैलने से रोकने के लिए इन राष्ट्र विरोधी पोस्ट पर निगरानी के लिए सरकार द्वारा कोई नियंत्रक व्यवस्था स्थापित करना एक ज़रूरत बन गयी है और समाज में हिंसक माहौल पैदा करने वाली ऐसी पोस्ट को साइबर अपराध के अंतर्गत कठोर कार्यवाही की ज़रूरत है। जिला या राज्य स्तर तक साइबर सेल की स्थापना और उसकी हर पल इन विवादस्पद पोस्ट पर कड़ी नज़र रखना आज समय की मांग बन गयी है ।इन दिनों फेक फेसबुक से डाटा चोरी करना और फेक आई डी बनाकर वित्त की धोखाधड़ी के मामले लगभग हर जगह और आस पास के क्षेत्रों में भी देखने को मिल रहे हैं ।क्या ऐसे अपराधों को वित्त अधिनियम के अंतर्गत अपराध घोषित कर कठोर कार्यवाही की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता ।

अधिकतर लोगों के विचार में दोष सोशल मीडिया पर भ्रामक प्रचार करने वाले वर्ग का ही होगा। पर वास्तव में ऐसे वर्ग के पथभ्रष्ट होने के लिए वह स्वयं जितना ज़िम्मेदार है उतना ही ज़िम्मेदार उससे जुड़ा समाज है। समाज से यदि इस भ्रामक शक्ति को उचित मार्गदर्शन मिला होता तो आज समाज की तस्वीर ही कुछ और होती। इसकी जड़ें हम उसके बचपन में राष्ट्रीयता की शिक्षा के अभाव के फलस्वरूप ही खोखली करनी शुरू कर देते हैं । यही कारण है युवा वर्ग में राष्ट्रीयता की भावना का लोप हो रहा है । आज के संक्रमण काल में जब बच्चों के हाथ में स्मार्टफोन आ गया है तो उसके दुरुपयोग होने की संभावना भी बढ़ गई है। ऐसे में समाज की प्रथम इकाई अर्थात् परिवार जनों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है । आज यदि हमें अपने सामाजिक ताने-बाने को बचाना है तो हमें अपने परिवार के युवा व किशोर वर्ग को ऐसा मार्गदर्शन देना होगा ताकि उनका नैतिक व चारित्रिक उत्थान हो सके। शासन के द्वारा कानून बनाने के साथ-साथ पारिवारिक माहौल इस दिशा मे ज़्यादा सार्थक परिणाम दे सकता है ।

जैसे छोटा-सा तिनका हवा का रुख बताता है, वैसे ही मामूली घटनाएं मनुष्य के हृदय की वृत्ति को बताती है।

— राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

श्री राजपाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

कोरोना काल और हम

क्यूं थम गया रे तू चल, निकल
जमी बर्फ जल्दी जाएगी पिघल।
कुदरत की चाल तन्हाई या शहनाई,
कभी मिलन कभी जुदाई,
यहां धूप वहां परछाईं,
काली रात कब सुबह को रोक पाई,
तू इरादे रख अटल,
मिल जाएगा सूखे हलक को जल।
क्यूं थम गया रे तू चल ....

तेरी भूख और मुफलिसि ही तेरा फरेब है
लाख तसल्ली के बाद भी खाली तेरी जेब है
फिर भी तू हौसलों से लबरेज़ है
पैरों के छाले ही तो तेरी पाज़ेब है
तू पैरों के लहू से ना फिसल,
दलदल है गहरा चलना संभल-संभल।
क्यूं थम गया रे तू चल ....

कद गमों के पहाड़ का तेरे कद से है थोड़ा,
मुश्किलें कबसे बनने लगी तेरी राह का रोड़ा।
कब तू इस तरह इनसे डरके है दौड़ा,
तेरे बुलंद इरादों ने तूफानों को मोड़ा,
इन तूफानों में ज़रा संभल,
ढल जाएगी तेरे ही सांचे में ये गरल।
क्यूं थम गया रे तू चल .....

तू इन्सां है यहां तो फरिश्तों का इम्तिहां होता है,
क्या भूख से नाता उसका जो खेत को जोता है,
जागत है वो पावत है सोया है सो खोया है,
ये जागने का लम्हा है फिर तू क्यूं सोता है,
कर राज, पाल के इरादों का एक दल,
बल है तो आज में, कब आया है कल।
क्यूं थम गया रे तू चल, निकल
जमी बर्फ जल्दी जाएगी पिघल।

सुश्री बलजिन्द्र कौर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

मेरे साथ मेरा क्या जाएगा

एक विद्वान साधु थे, जो दुनियादारी से दूर रहते थे । वे अपनी ईमानदारी सेवा तथा ज्ञान के लिए प्रसिद्ध थे । एक बार वे समुद्री जहाज से लंबी यात्रा पर निकले । उन्होंने यात्रा में खर्च करने के लिए पर्याप्त धन तथा एक हीरा संभाल के रख लिया । उन्हें ये हीरा किसी राजा ने उनकी ईमानदारी से प्रसन्न होकर भेंट किया था । वे उसे अपने पास न रखकर किसी अन्य राजा को देने के लिए ही यात्रा पर निकले थे ।

यात्रा के दौरान साधु की पहचान दूसरे यात्रियों से हुई । वे उन्हें ज्ञान की बातें बताते गए । एक फकीर यात्री ने उन्हें नीचा दिखाने की मंशा से उनके साथ नज़दीकियाँ बढ़ा लीं । एक दिन बातों-बातों में साधु ने उसे विश्वासपात्र मानकर हीरा दिखा दिया । उस फकीर को लालच आ गया। उसने उस हीरे को हथियाने की योजना बनाई । रात को जब साधु महाराज सो गए तो उसने उनके झोले तथा वस्त्रों में हीरा ढूँढ़ा पर उसे वह नहीं मिला । अगले दिन दोपहर के भोजन के समय साधु से कहने लगा कि इतना कीमती हीरा है आपके पास, आपने संभाल के रखा है ना ? साधु ने अपने झोले से हीरा निकालकर दिखाया कि देखो, ये मैंने इसमें रखा हुआ है। हीरा देखकर फकीर को बड़ी हैरानी हुई कि ये उसे उस झोले में कल रात को क्यों नहीं मिला । आज रात फिर प्रयास करूँगा ये सोचकर उसने दिन काटा और सांझ होते ही तुरंत अपने कपड़े टाँगकर, सामान रखकर, स्वास्थ्य ठीक नहीं है कहकर जल्दी सोने का नाटक किया । साधु महाराज पूजा-अर्चना करने के बाद जब कमरे में आए तो उन्होंने देखा फकीर सो रहा है । सोचा आज स्वास्थ्य ठीक नहीं है इसलिए फकीर बिना इबादत किए जल्दी सो गया होगा । उन्होंने भी अपने कपड़े और झोला उठाकर टाँग दिया और वह भी सो गए । जब आधी रात हुई, फकीर उठा और उसने साधु के कपड़ों तथा झोले को झाड़कर देखा परन्तु उसे फिर भी हीरा नहीं मिला । अगले दिन उदास मन से फिर फकीर ने साधु से पूछा- इतना कीमती हीरा संभाल कर तो रखा है ना ? साधु बाबा, यहाँ बहुत से चोर हैं ।

साधु ने फिर अपना झोला खोलकर उसे हीरा दिखा दिया । अब हैरान परेशान फकीर के मन में जो प्रश्न था, उसने साधु से खुलकर कह दिया । उसने साधु से पूछा कि मैं पिछली दो रातों से आपके कपड़े तथा झोले में इस हीरे को ढूँढता हूँ, मगर मुझे नहीं मिलता । ऐसा क्यों, रात को यह हीरा कहाँ चला जाता है । साधु ने बताया – मुझे सब पता है कि तुम एक कपटी इंसान हो । तुम्हारी नीयत इस हीरे पर खराब थी और तुम इसे हर रात अंधेरे में मेरे कपड़ो में और झोले में ढूँढकर चोरी करने का प्रयास करते थे इसलिए पिछली दो रातों से यह कीमती हीरा तुम्हारे ही कपड़ों में छुपा देता था और सो जाता था और सुबह होते ही तुम्हारे उठने से पहले इसे वापस निकाल लेता था । मेरा ज्ञान यह कहता है कि व्यक्ति अपने भीतर नहीं झाँकता। दूसरों में ही सब अवगुण तथा दोष देखता है । कहने का भाव है कि कभी अपनी गठरी नहीं टटोलता । तुम भी ऐसा ही करते थे, अपनी गठरी नहीं टटोलते थे । मेरे ही कपड़ों और झोले में हीरा ढूँढते थे ।

फकीर के मन में यह बात सुनकर और ज़्यादा ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न हो गया । वह मन ही मन साधु से बदला लेने की सोचने लगा । उसने सारी रात जागकर एक योजना बनाई । सुबह उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना शुरु कर दिया – हाय मैं मर गया। मेरा एक कीमती हीरा चोरी हो गया । वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा । जहाज के कर्मचारियों ने कहा – फकीर जी, आप घबराते क्यों हो, जिसने भी चोरी की होगी वह यहीं होगा । हम एक-एक की तलाशी लेते हैं, वह पकड़ा जाएगा । यात्रियों की तलाशी शुरु हई । जब साधु बाबा की बारी आई तो जहाज के कर्मचारियों और यात्रियों ने उनसे कहा- आपकी क्या तलाशी ली जाए । आप पर तो अविश्वास और शक करना ही अधर्म है ।

यह सुनकर साधु बाब बोले – नहीं, जिसका हीरा चोरी हुआ है उसके मन में तो शंका बनी रहेगी इसलिए आप मेरी भी तलाशी लो । बाबा की तलाशी ली गई परन्तु उनके पास से कुछ नहीं मिला । दो दिनों के बाद जब यात्रा खत्म हुई तो उसी फकीर ने उदास मन से साधु से पूछा - बाबा, इस बार तो मैंने अपने कपड़े भी टटोले थे, हीरा तो आपके पास था, वो कहाँ गया ?

साधु ने मुस्करा कर कहा - उसे तो मेंने बाहर पानी में फेक दिया । साधु ने फकीर से पूछा – तुम जानना चाहते हो क्यों ? क्योंकि मैंने मेरे जीवन में दो ही पुण्य कमाए थे, एक ईमानदारी और दूसरा लोगों का विश्वास । अगर मेरे पास से हीरा मिलता और मैं लोगों से कहता कि ये मेरा ही है तो शायद सभी लोग साधु बाबा के पास हीरा होगा इस बात पर विश्वास नहीं करते । यदि मेरे भूतकाल के सत्कर्मों के कारण विश्वास कर भी लेते तो भी मेरी ईमानदारी और सत्यता पर कुछ लोंगों का संशय बना रहता । मैं धन तथा हीरा तो गँवा सकता हूँ लेकिन ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को खोना नहीं चाहता । यही मेरे पुण्यकर्म हैं जो मेरे साथ जाएँगे । वह फकीर बहुत शर्मिंदा हुआ । वह साधु बाबा के पैर पकड़कर रोने लगा और बाबा से माफ़ी माँगी ।

श्रीमती रश्मि महाजन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

ख्वाहिशें

(संकलन)

सब कुछ मिल जाएगा ज़िंदगी में
तो तमन्ना किसकी करोगे..
कुछ अधूरी ख्वाहिशें ही तो
ज़िंदगी जीने का मज़ा देती हैं

हो सके तो ज़िंदगी में सुकुन ढूंढिए..
ये ख्वाहिशें तो ज़िंदगी भर
खत्म नहीं होंगी..।

आंखें आपकी हो
या मेरी हों..
बस इतनी सी ख्वाहिश है
कभी नम न हों..

वक्त, ख्वाहिशें और सपने
हाथ मैं बंधी घड़ी की तरह हैं
जिसे हम उतार कर भी रख दें
तो भी उनका चलना नहीं रुकता

ज़्यादा ख्वाहिशें नहीं तुझसे ऐ ज़िंदगी
बस..ज़िंदगी का अगला लम्हा
पिछले से बेहतरीन हो..

लम्हों की एक किताब है
ज़िंदगी,
सांसों और ख़्यालों का हिसाब है
ज़िंदगी
कुछ ज़रूरतें पूरी, कुछ
ख्वाहिशें अधूरी,
बस इन्हीं सवालों का जवाब है
ज़िंदगी।

जाने वो कैसे मुकद्दर की किताब
लिख देता है..
सांसे गिनती की और ख्वाहिशें
बेहिसाब लिख देता है..।

ख्वाहिशों के दाम महंगे हो
सकते है,
मगर खुशियां हरगिज़ महंगी
नहीं होती..।
उम्र का एक पड़ाव पार करने के बाद भी
अगर ख़्वाहिशें पीछा नहीं छोड़ रहीं तो
जिंदा हो तुम ------

श्री दीपक कुमार
तदर्थ सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

शायरी

इससे पहले कि ज़माने की नज़रों में आए
चल हम खुशियों की तस्करी कर लें ।

थोड़ा सा दिन ढलने पर ही जाता हूँ मंडी
मुमकिन है वो सब्ज़ी ज़रा सस्ती कर दे ।

मज़हब की राह चलने का है आसान सा तरीका
किसी मुफ़लिस की बिन चाह कोई मदद कर दे ।

हिमालय का शिखर तो सागर की गहराई कभी
दरिया इक मंज़िल से दूजी मंज़िल का सफ़र तय कर लें ।

मेरा दर्द माँ न झेल पाएगी
काश आज आँसू मौका परस्ती कर लें ।

मैं भी किसी की उम्मीद बन सकूँ ख़ुदा मेरे
इतनी तो मेरी तरक्की कर दे ।

जीने का सलीका फिर से सीख सकूँ
ऐ ख़ुदा मुझे बच्चों जितना बड़ा कर दे ।

हुनर काफी है आगे बढ़ने के लिए
फिर भी दिल चाहता है, कोई मेरी सिफारिश कर दे ।

कभी तो आँख मींच ख़ुदा मेरे
हम भी ज़रा अपनी मन-मर्ज़ी कर लें ।

श्री संतोष कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

शायरी

मैं अब अपने लिए कोई सज़ा नहीं हूँ
मैं अब कल जितना अच्छा नहीं हूँ

समझता हूँ सब चालाकियाँ तेरी ज़िंदगी
मैं अब कल की तरह बच्चा नहीं हूँ

सुकून के पलों का हकदार हूँ मैं भी
फ़िक्र है मुझे अपनी, मैं ख़ुदगर्ज़ नहीं हूँ

उसके दूर जाने का अफसोस नहीं मुझको
बस यकीं दिला दूँ ख़ुद को, मैं भी बँधा नहीं हूँ

मैं अब अपने लिए कोई सज़ा नहीं हूँ
रोशन करता हूँ चिराग़ों को, जला नहीं हूँ ।।

बच्चों की कलाकृतियां

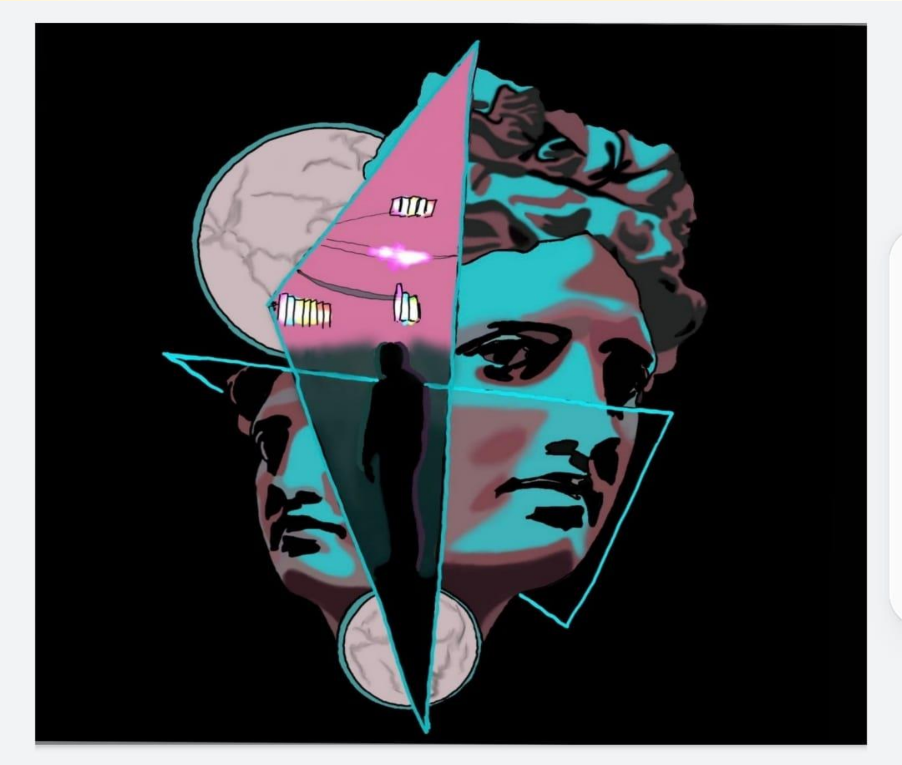

मानवी शर्मा, सपुत्री श्रीमती भावना शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आयुष रतन, सुपुत्र श्रीमती दीपशिखा पुंज, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मनजोत सिंह, सुपुत्र श्रीमती नवदीप कौर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पुनर्नवा सिंह रावत, सुपुत्री श्रीमती गायत्री रावत, सहायक पर्यवेक्षक

सक्षम, पौत्र श्री राजपाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आदित्य, सुपुत्र श्रीमती आरती देवी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

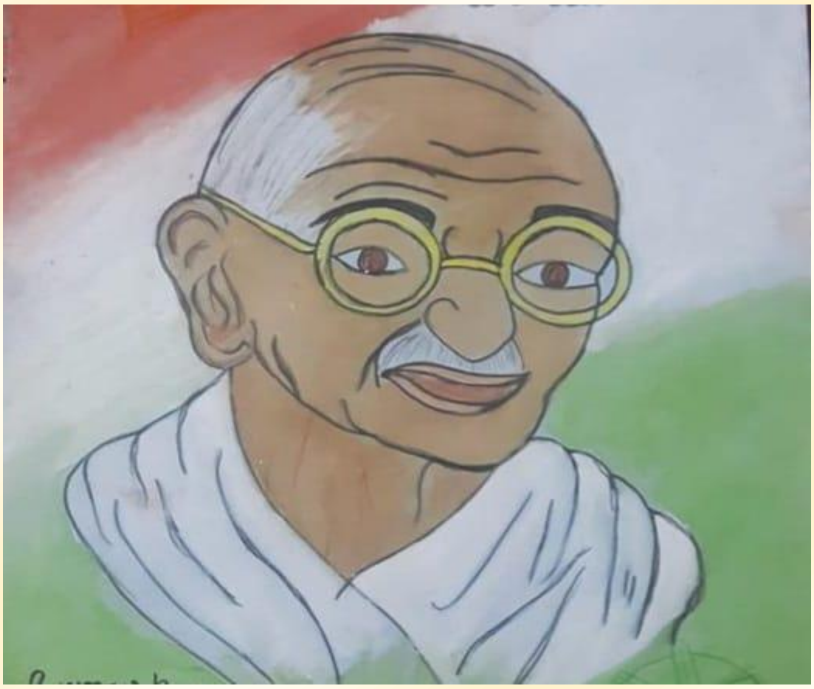

गुरनूर कौर, सुपुत्री श्रीमती नवदीप कौर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

वान्या आहूजा, सुपुत्री श्रीमती गुरविंदर कौर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री रविन्द्र सिंह
लिपिक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

शायर दिल

ज़िंदगी से कई बार यूँ समझौता कर लिया ।
भूख लगी तो ख़्वाबों से ही पेट भर लिया ।।

नाकामियाँ हँसती रही इक छोर से मुझपर ।
हमने भी इक सिरा उम्मीदों का पकड़ लिया ।।

क्या क्या बातें बनाते रहे लोग यहाँ ।
मदमस्त हाथी की तरह मैं चल दिया ।।

अस्मिता की लाज कपड़ों से नहीं मुमकिन ।
इंसान ने जहालत से जेहन ढँक लिया ।।

मंज़िल की तलाश में निकला हूँ मैं ।
एहतिहातन जेब में हमने पता रख लिया ।।

लोग समझेंगे खुदा तुमको ।
मुहब्बती मज़हब में मैंने खुद को रंग लिया ।।

बहुत बुरे हालात हैं आजकल ज़माने के ।
यह सोचकर थोड़ा मैं सुधर गया ।।

आज़ाद हूँ मैं आज अपने आप से भी ।
थोड़ा सा ठहरा हुआ, थोड़ा चल लिया ।।

श्री संजीव

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

चालीस साल

ज़िंदगी का मँझधार है यह, या मँझधार पार हो गया
रोते-हँसते, गिरते-संभलते मैं भी चालीस पार हो गया ।।

बालों में हल्की सफेदी, चेहरे पे झुर्रियों की दस्तक
लगता है जैसे मैं थोड़ा और जवान हो गया
रोते-हँसते, गिरते-संभलते मैं भी चालीस पार हो गया ।।
दुनिया जीतने की चाह नहीं, आसमां छूने की भी ज़िद नहीं
जो कभी सपने में भी ना चाहा वो भी साकार हो गया
रोते-हँसते, गिरते-संभलते मैं भी चालीस पार हो गया ।।

नहीं अब वो बेमतलब की बातें, ना ही वो बेमतलब की राहें
मेरा परिवार ही मेरा घर-संसार हो गया
रोते-हँसते, गिरते-संभलते मैं भी चालीस पार हो गया ।।

कभी नादानी तो कभी जहालत नाम मिला मुझको
लोग समझे के मैं किताबें पढ़कर समझदार हो गया
रोते-हँसते, गिरते-संभलते मैं भी चालीस पार हो गया ।।

लाइफ़ बिगिंस एट फोर्टी.. का अर्थ बताऊँ तुमको
दिल के चारों कोनों का नाम
ख़ुदा, कुदरत, किताबों से मुझे प्यार हो गया
रोते-हँसते, गिरते-संभलते मैं भी चालीस पार हो गया ।।

ज़िंदगी का मँझधार है यह या मँधझार पार हो गया
हाथ थामकर ले आई है ज़िंदगी यहाँ
जहाँ हर शख्स से मुझे प्यार हो गया.. मैं भी चालीस पार हो गया ।।

श्री विजय कुमार अधलखा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

संतोष धन

संसार में बुद्धिमान व्यक्ति की सबसे बड़ी पूँजी संतुष्टता ही है । मूर्ख व्यक्ति कभी संतुष्ट नहीं हो सकता । संतोष सबसे बड़ा खज़ाना है । संतुष्ट रहने वाले लोग सदा खुश रहते हैं । भगवान की मदद भी उनको मिलती है जो सदा संतुष्ट रहते हैं । जो जितना अधिक संतोषी होगा, उसकी इच्छाएँ कम होती हैं और वह उतना ही अधिक सुखी होगा । लालच से जीवन में शान्ति का अंत हो जाता है । अपनी सीमाओं में रहकर जो दूसरों से अपनी तुलना नहीं करता वही सुखी रहता है । संतुष्ट रहना कमज़ोरी नहीं है, यह आत्मा की ताकत है । संतोष दिव्य गुण है । जब भारत में देवी - देवता संपूर्ण संतुष्ट थे तो भारत स्वर्ग था । हर व्यक्ति को सब कुछ मिल नहीं सकता । जिनके पास बहुत कुछ हो उनमें भी कहीं न कहीं खालीपन है । अहंकार व्यक्ति को कभी संतुष्ट नहीं बनने देता । संतोषी बनने में रुकावट आती है परन्तु जो सच्चे दिल से संतुष्ट रहने का संकल्प करता है तो सब बाधाएँ दूर हो जाती हैं । संतोष खुशियों की चाबी है। जो व्यक्ति स्वयं से तथा सर्व से संतुष्ट है, उसे किसी भी प्रकार का तनाव नहीं हो सकता । मेहनत से कमाया धन और उसका ईमानदारी से इस्तेमाल संतोष प्रदान करता है ।

संतोष का यह अर्थ नहीं है कि हम अपने विकास पर अंकुश लगा दें । सर्व प्राप्तियाँ होते हुए भी व्यर्थ की इच्छाओं से तथा दूसरों को तुच्छ सिद्ध करने के विचारों से जो मुक्त हो वही सदा संतुष्ट रह सकता है । हम बहुत सी जानकारियाँ तथा हद की प्राप्तियों को ही अपने जीवन का लक्ष्य मान लेते हैं लेकिन संयम को नहीं जान पाते । यही हमारी असंतोष का कारण है ।

जो व्यक्ति संतुष्ट रहता है वह सबकी दुआएँ प्राप्त करता है तथा इसके द्वारा दिया गया आर्शीवाद सदा फलित होता है। संतुष्ट आत्मा में सहनशीलता स्वतः ही आ जाती है तथा वह कभी आवेश में नहीं आता, इसलिए वह सभी का प्रिय व सभी को सुख देता है और अपनी शुभ भावना, शुभ कामना से असंतुष्ट आत्मा को भी संतुष्ट कर देता है । श्रेष्ठ संकल्प से, योग साधना से तथा परमात्मा के सुमिरण से संतोष गुण के वरदान को प्राप्त किया जा सकता है ।

श्री विजय कुमार अधलखा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

खुद से

खुद में रहकर वक्त बिताओ तो अच्छा है
खुद का परिचय खुद से कराओ तो अच्छा है
तेरी-मेरी, इसकी-उसकी छोड़ो भी अब
खुद से खुद की शक्ल मिलाओ तो अच्छा है
बदन को महकाने में सारी उम्र काट ली
रूह को अब अपनी महकाओ तो अच्छा है
दुनिया भर में घूम लिए हो जी भर के अब
वापस खुद में लौट के आओ तो अच्छा है
तन्हाई में ख़ामोशी के साथ बैठ कर
खुद को खुद की गज़ल सुनाओ तो अच्छा है ।

शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं उपलब्ध होती, वह अजेय संकल्प से उत्पन्न होती है।

— महात्मा गाँधी

सुश्री बलजिन्द्र कौर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

हल्दी- रोग भगाए जल्दी

हमारा शरीर इस ब्रह्माण्ड की तरह पाँच तत्वों से बना हुआ है । शरीर को सुचारु रूप से काम करने के लिए ये पाँच तत्व तीन प्रकार की ऊर्जाओं में परिवर्तित होते हैं । इन्हें वात, पित्त तथा कफ कहते हैं । बेहतर सेहत के लिए इन तीनों में सामंजस्य होना बहुत ज़रूरी है वरना हम कई बीमारियों का शिकार हो सकते हैं । बहुत सारी बीमारियों से बचने के लिए कुछ जड़ी-बूटियाँ तो हमारे घर में ही उपलब्ध होती हैं जिनका प्रयोग हम नित-प्रतिदिन करते ही हैं । इसी प्रकार की एक जड़ी-बूटी का नाम है- हल्दी ।

हल्दी एक प्रकार की जड़ी-बूटी है जिसका प्रयोग भोजन को स्वादिष्ट बनाने वाले मसाले के रूप में किया जाता है लेकिन यह वास्तव में कई प्रकार की बीमारियों को रोकने और इलाज में काफी कारगर होती है । हल्दी के बहुत लाभ हैं, जैसे–

1. दाग, धब्बे व झाइयाँ मिटाने के लिए हल्दी बहुत फायदेमंद है । चेहरे से झाइयाँ, दाग-धब्बे हटाने के लिए हल्दी और काले तिल को बराबर मात्रा में पीसकर पेस्ट बनाकर चेहरे पर लगाएँ ।
2. हल्दी को दूध में मिलाकर इसका पेस्ट बना लीजिए । इस पेस्ट को चेहरे पर लगाने से त्वचा का रंग निखरता है और आपका चेहरा खिला-खिला देखेगा ।
3. लीवर संबंधी समस्याओं में भी इसे बहुत उपयोगी माना जाता है ।
4. सर्दी-खाँसी होने पर दूध में कच्ची हल्दी पाऊडर डालकर पीने से जुकाम ठीक हो जाता है ।
5. पेट में कीड़े होने पर एक चम्मच हल्दी पाउडर में थोड़ा-सा नमक मिलाकर रोज़ सुबह खाली पेट एक सप्ताह तक ताज़े पाने के साथ लेने से कीड़े खत्म हो जाते हैं ।
6. खाँसी होने पर हल्दी का इस्तेमाल कीजिए । अगर खाँसी आने लगे तो हल्दी की एक छोटी सी गाँठ मुँह में रखकर चूसें, इससे खाँसी नहीं आती ।

7. अगर त्वचा पर अनचाहे बाल उग आए हों तो इन बालों के हटाने के लिए हल्दी पाउडर को गुनगुने नारियल तेल में मिलाकर पेस्ट बना लें । अब इस पेस्ट को हाथ-पैरों पर लगाएँ । ऐसा करने से शरीर के अनचाहे बालों से निजात मिलती है ।
8. धूप में जाने के कारण त्वचा अक्सर सांवली हो जाती है । इससे निजात पाने के लिए चुटकी भर हल्दी पाउडर, बादाम चूर्ण आधा चम्मच और दो चम्मच दही मिलाकर प्रभावित स्थान पर लगाइए । इससे त्वचा का रंग निखर जाता है और सनबर्न की वजह से काली पड़ी त्वचा भी ठीक हो जाती है ।
9. मुँह में छाले होने पर गुनगुने पानी में हल्दी पाउडर मिलाकर कुल्ला करें या हल्का गर्म हल्दी पाउडर छालों पर लगाएँ । इससे मुँह के छाले ठीक होते हैं ।
10. चोट लगने पर या मोच आने पर हल्दी बहुत फायदा करती है । माँसपेशियों में खिंचाव या अंदरूनी चोट लगने पर हल्दी का लेप लगाएँ या गरम दूध में हल्दी पाउडर डालकर पीजिए ।
11. हल्दी का प्रयोग करने से खून साफ होता है जिससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है ।

गुणकारी हल्दी के अलग-अलग लाभ उठाने के लिए आपको किसी वैद्य या विशेषज्ञ की शरण में जाने की ज़रूरत नहीं है । अपने घर पर ही छोटे-छोटे प्रयोग कर इसके अलग-अलग लाभ उठाए जा सकते हैं ।

हल्दी का प्रयोग लगभग सभी प्रकार के भोजन में किया जाता है । यह व्यंजनों के स्वाद में तो इज़ाफा करती ही है साथ ही इसमें अनेक औषधीय गुण भी होते हैं । त्वचा, पेट और शरीर की कई बीमारियों में हल्दी का प्रयोग किया जाता है । हल्दी के पौधे से मिलने वाली इसकी गाँठें ही नहीं बल्कि इसके पत्ते भी बहुत उपयोगी होते हैं ।

रचनाकारों से अनुरोध

- *संयुक्ता के अगले अंक के लिए प्रत्येक विधा की रचनाओं का स्वागत है।*
- *रचनाकार कृपया अपने मौलिक, अप्रकाशित, अप्रसारित व श्रेष्ठ रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजें।*
- *रचना के साथ अपना एक पासपोर्ट साइज फोटो तथा रचना की मौलिकता एवं अप्रकाशित होने का प्रमाण-पत्र भी लगाएं।*
- *रचना दोनों तरफ हाशिया छोड़कर कागज़ की एक ओर ही लिखी हो और सुपाठ्य हो। साथ ही रचना को उपयुक्त शीर्षक भी दिया गया हो।*
- *रचनाकार कृपया रचना भेजते समय उसकी एक प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।*
- *कार्यालय का कार्य प्रकृति से संबंधित तकनीकी लेखों का विशेष रुप से स्वागत है।*

श्री यादेव सिंह
सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

मधुर वाणी

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे अपने दोस्तों पड़ोसियों से अच्छे संबंध रखने पड़ते हैं। मधुरता एक बड़ा शब्द है जिसका प्रयोग जीवन के अनेक भागों में किया जाता है। पड़ोसियों के साथ रिश्ते वाणी के स्वरूप पर ही निर्भर करते हैं। एक मधुर वाणी एवं मिलनसार स्वभाव का व्यक्ति अपने शत्रु को भी मित्र बना देता है। इसके विपरीत कर्कश वाणी का व्यक्ति अपने अच्छे दोस्त को भी शत्रु बना देता है। मधुरता एक ऐसा दिव्य गुण है जिसे धारण करने से जीवन में अद्भुत प्रभाव देखे जा सकते हैं। कई सारे जटिल काम और कई रहस्य व मुश्किलें मधुर वाणी से हल हो जाती हैं। यह सभी को अचानक ही खोलकर रख देती हैं। भारतीय संस्कृति में ईश्वर से प्रार्थना की जाती है – हे परम पिता परमेश्वर मेरे मुंह में मधु हो तथा सदैव मैं मधुर वाणी बोलूं। किसी ने नारी के गुणों के बारे में ठीक ही लिखा है कि सुंदरता, सौंदर्य, परिधान, आभूषण इन सभी से ऊपर मीठी वाणी को स्थान दिया गया है। मधुरता को ही सबसे बड़ा धन व श्रृंगार माना गया है। मधुर वाणी बोलने वाली स्त्री घर को स्वर्ग बना देती है। वहीं सर्वगुण संपन्न नारी की कटु वाणी पूरे घर के माहौल को नरकमय बना देती है। व्यक्ति को सदा मधुर भाषी ही होना चाहिए क्योंकि इसके अनेकों लाभ हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति से मधुर भाषा में बात करेगा तो फलस्वरूप अन्य व्यक्ति न केवल उस व्यक्ति से मधुर भाषा में बात करेगा अपितु उसके प्रति मान सम्मान भी रखेगा। मधुर भाषी होने के कारण व्यक्ति समाज में आदर प्राप्त करेगा। कठिन परिस्थितियों में यदि वह समाज से किसी प्रकार की सहायता मांगता है तो समाज उसकी सहायता अवश्य करता है। समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की दृष्टि में मधुर भाषी व्यक्ति के लिए सम्मान की भावना होती है जिसके फलस्वरूप समाज का प्रत्येक व्यक्ति सदा उसका भला ही सोचता है। मधुर वाणी केवल सुनने वाले को ही आनंदित नहीं करती बल्कि बोलने वाले को भी आनंद पहुंचाती है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी कहा है:

‘ मीठे वचन तें सुख उपजत चहुं ओर ’

श्री बीर सिंह
सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

धर्म और नैतिक मूल्यों का महत्व

धर्म के बिना नैतिकता का और नैतिकता के बिना धर्म का अस्तित्व नहीं है। सत्य, करूणा, क्षमा, स्नेह, सहानुभूति, आत्म-निर्भरता, निर्भीकता, वीरता, आत्म-त्याग ये सारे नैतिक मूल्य एक व्यक्ति को चरित्रवान बनाते हैं। सदगुणों को अपनाकर ही हमें सच्चा सुख, संतोष और आनंद प्राप्त हो सकता है। आज हमारा समाज नैतिक पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। यदि हर व्यक्ति सदाचार के महत्व को समझे और चरित्र-बल का विकास करे तो छल-कपट, पाखंड, व्याभिचार, षड्यंत्र और संघर्षों से हमारा समाज मुक्त हो सकता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इस बात का सरल अर्थ यह है कि मनुष्य अपने अस्तित्व और विकास के लिए समाज पर जितना निर्भर है उतना और कोई प्राणी नहीं। मनुष्य में हम जो भी सामाजिक गुण देखते हैं वह समाज की ही देन है। एक व्यक्ति की प्राथमिक पाठशाला उसका अपना परिवार होता है और परिवार समाज का वह अंग है जहां हमें सबसे पहले शिक्षा मिलती है। परिवार और समाज के अनुरूप ही एक व्यक्ति में सामाजिक गुणों तथा विशेषताओं का विकास होता है। आज हमारे समाज का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है। ये भी सही है कि परिवर्तन इस संसार का नियम है लेकिन जिस तरह से हमारे समाज में नैतिक मूल्यों का हनन होता जा रहा है वो सही नहीं है। किसी भी व्यक्ति में नैतिक मूल्यों का होना ही धर्म है। नैतिक मूल्यों के अनुरूप आचरण ही उसे चरित्रवान बनाता है। दूसरे शब्दों में नैतिक मूल्यों का पालन ही सदाचार है। सदाचार व्यक्ति को देवत्व की ओर ले जाता है और दुराचार से पशु बना देता है। आज का व्यक्ति अहंकारी होता जा रहा है उसका चंचल मन जो कहता है उसी के अनुरूप आचरण करना उसे सही लगने लगा है। हमारे आधुनिक समाज में इस भाव की तेज़ी से कमी होती जा रही है। सदाचार की जगह औपचारिकता लेती जा रही है। हर व्यक्ति भौतिक सुख-संसाधनों से सच्चा सुख पाना चाहता है जिसके लिए वह सही या गलत तरीके से ज़्यादा से ज़्यादा रुपये कमाना चाहता है। अपना जो समय उसे घर परिवार और समाज को देना चाहिए वो रुपयों के पीछे भागने में गंवा देता है। आज का युग डिजिटल का युग है। इसके कारण व्यक्ति का व्यवहार, रहन-सहन, खान-पान विचार भी बदल गए हैं। इसके कई फायदे भी हैं और नुकसान भी। सोशल मीडिया के हमारे जीवन में दखल ने दूर के लोगों को तो पास ला दिया है पर परिवार और समाज से दूर कर

दिया है। अधिकांश लोगों का कीमती समय यहां व्यतीत होता है। मैं सोशल मीडिया के महत्व को नकार नहीं रहा हूं बल्कि उपयोग और दुरुपयोग के बारे में कहना चाह रहा हूं। सोशल मीडिया से ज़रूर जुडे रहें पर परिवार और समाज को भी समय दें क्योंकि सच्चाई ये है कि भौतिक सुख-संसाधनों से सच्चा सुख पाना संभव नहीं, मन की शांति इनसे नहीं मिल सकती। मन की शांति के लिए धर्म के रास्ते पर चलना होगा और यह सदाचार से ही संभव है। आज व्यक्ति की मानसिकता में परिवर्तन सही दिशा की तरफ कम और गलत दिशा की तरफ ज़्यादा हो रहा है। इसी का परिणाम है कि हमारे समाज का स्वरूप तेज़ी से बदल रहा है। चोरी, डकैती, खून-खराबा, शोषण और अत्याचार की दुर्घटनाएं बढ़ती ही जा रही हैं। जब समाज का स्वरूप ही परिवर्तित होता जा रहा है तो एक व्यक्ति का सही समाजीकरण कैसे संभव हो सकता है। हर इन्सान के भीतर सही-गलत का निर्णय करने के लिए अंतरात्मा है जिसकी आवाज़ हमें सही और गलत का अंतर बताती है। ये बताती है कि कौन सा कार्य सही है और कौन सा गलत। हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। अगर हम सभी अपनी अंतरात्मा की आवाज़ के अनुरूप आचरण करें तो नैतिक मूल्यों की उपेक्षा कभी नहीं करेंगे।

हमें यह जो मानव शरीर मिला है यह ईश्वर की कृपा का फल है। मानव योनि बहुत भाग्यवान को मिलती है। मनुष्य को चाहिए कि मनुष्य का शरीर पाकर इन्द्रिय लिप्सा में न पड़ा रहे बल्कि सदाचरण की ओर प्रवृत्त हो। ऐसे मनुष्य का जीवन धिक्कार है जो मनुष्य का शरीर पाकर भी दूसरे मनुष्यों को पीड़ा और कष्ट पहुंचाता है।

※ गोस्वामी तुलसीदास ※

श्री अनिल कुमार
लेखापरीक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

अनुशासन का महत्व

अनुशासन का अर्थ है कि नियमों के अनुसार जीवन यापन करना। यह मानव की प्रगति का मूल मंत्र है। हर एक मनुष्य के जीवन में अनुशासन का होना सबसे ज़्यादा महत्व रखता है। खुशहाल जीवन जीने के लिए अनुशासन का होना बहुत ही आवश्यक है। अनुशासन के बिना हम जीवन नहीं जी सकते। परिवारिक और सामाजिक जीवन में तो अनुशासन की ज़्यादा आवश्यकता होती है। जिस देश के लोग अनुशासित हैं, जहां की सेना अनुशासित है वह देश निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा। जिस व्यक्ति में अनुशासन नहीं होता वह अनुशासनहीन कहलाता है। जीवन में सफल व्यक्ति बनने के लिए अनुशासन का होना बहुत ही आवश्यक है। जो भी कार्य हम सही समय पर करते हैं और जिस ढंग से करते हैं उससे हमारे अंदर अनुशासन का पता चलता है। बड़े-बड़े उद्योगपति भी अपने काम को अनुशासन से करते हैं ताकि काम सही तरीके से पूरा हो और समय भी कम लगे। जो लोग अनुशासन को नहीं मानते हैं उन लोगों का हर दिन ऐसे ही व्यर्थ चला जाता है, वे लोग अपने जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पाते हैं। उनकी ज़िंदगी पूरी तरह अस्त-व्यस्त रहती है। जब कोई भी व्यक्ति अनुशासन की राह से दूर हट जाता है तो वह व्यक्ति प्रगति नहीं कर पाता। अनुशासन से बाहर रहने बाला व्यक्ति बड़ों की इज़्ज़त नहीं करता है और अनुशासनहीन व्यक्ति का व्यवहार अलग ही होता है। अनुशासन में रहकर व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक बना सकता है। अनुशासन में रहकर व्यक्ति बहुत सारी अच्छी बातें सीखता है। अनुशासन के माध्यम से व्यक्ति सभी कार्यों को क्रमबद्ध तरीके से कर सकता है या फिर कह सकते हैं कि जीवन में जितने भी कार्य हैं उनको सही ढंग से करने की विधि है। अनुशासन के महत्व की बात करें तो यह हर किसी मनुष्य के लिए होना बहुत ज़रूरी है। अनुशासन के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। अनुशासन ही हमारे जीवन की सफलता की कुंजी है। इसके अनुसार ही हमारे जीवन का भविष्य तय होता है। इसलिए हमें अपने जीवन में अनुशासन को महत्व देना चाहिए और एक अनुशासित जीवन जीना चाहिए।

श्रीमती जसबीर कौर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

सृष्टि

सृष्टि क्या है? किसने बनाई? सुंदर रचना किसने सजाई?
सोच-सोच मन होत बिसरायी, कैसी अजब यह लीला रचाई।
सुबह देख सूर्य लालिमा, मन में असंख्य विचार भरमाए,
भगवान की इस संरचना में, इतने रंग कहां से आए।

आवाज़ मधुर इन जीवों में, जाने कहां से आई है,
निगाह जो डालो आस-पास , हर तरफ हरियाली छाई है।
हरियाली के बीच अनेकों फूल कहां से आए हैं,
इन फूलों का रस चखने को, जीव हज़ारों आए हैं।
इन फूलों में रंग और खुशबू आई कहां से बूझो तो,
यही है सृष्टि ईश्वर की, अगर हम दिल से मानें तो।

इस सृष्टि के हर जीव को,
अन्न-जल, हवा, रोशनी, सब कुछ दिया भगवान ने,
किंतु क्या हम इस बात पर, पूर्ण भरोसा करते हैं।
ईश्वर की इस रचना को, संभाल के क्या हम रखते हैं?

अगर हां तो धरती पर भू-स्खलन, भूकंप, सुनामी क्यों हैं,
कभी बाढ़ तो कभी सूखे का, जर-जर मंज़र क्यों है।
हे मानव, संभाल ले इस ग्रह को, संभाल ले अपने आप को,
प्रकृति का उपयोग कर, पर सहज उसे बर्बाद न कर।
आने वाली पीढ़ियों को भी, ढंग से जीने का दे अवसर।
मान ले भाई, इसको संभाल ले भाई, फिर न पछताई।

श्रीमती कविता गुप्ता
सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

मैं कविता हूं

मैं कविता,
पोयट मुझे पोयम, कवि कविता,
शायर मुझे नज़्म से पुकारते हैं।
मेरा नहीं है कोई मज़हब
मन्दिर, मस्ज़िद और गिरजाघर
हर जगह मुझे सत्कारते हैं।

मैं कविता,
मैं अंजान हूं मैं नादान हूं
कलम से हुआ जन्म मेरा
कुछ शब्दों का जाल हूं
और किसी की पहचान हूं।

मैं मिलती हूं, कुछ किताबों के पन्नों में
कुछ स्याही के रंगों में
जीवन का हिस्सा हूं, जीवन के रंगों में।

मैं कविता,
ज़माने के साथ मैं भी बदल रही हूं,
कंप्यूटर होगा मेरा अगला ठिकाना
पन्ने नहीं वदलने होंगे वहां आपको
बस थोड़ा सा माऊस हिलाना।

मैं कविता,
करती हूं वार बुराइयों पर, मैं तेज़ धार हूं,
करती हूं मनोरंजन सभी का, मैं महफिलों का श्रृंगार हूं
मैं रहती तो हूं यहां, पर उस पार भी हूं।
मैं कविता हूं

श्री राजीव वालिया
सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़

चुटकुले

आज–कल की भागती-दौड़ती उलझनों भरी जिन्दगी में इतना तनाव बढ़ गया है कि लोग हंसना ही भूल गए हैं। जबकि हंसना सेहत के लिए फायदेमंद होता है। इसलिए हंसने का कोई भी मौका छोड़ना नहीं चाहिए। हमारे देश में हर कोई पति और पत्नी पर चुटकुले पसंद करता है। आओ सुनें और हंसें।

1. एक व्यापारी व्यक्ति जब ससुराल से वापिस अपने घर चलने लगा तो उसकी सास ने उसको भेंटस्वरुप पचास रुपए दिए। घर पहुंचते ही उसने पत्नी से कहा मैं साठ रुपए के केले लेकर गया था, मुझे आज दस रुपए का घाटा पड़ गया। इतना सुनकर पत्नी माथा पकड़कर बैठ गई और बोली तुम मुझे लेने गए थे या केले बेचने ....

2. पति अपनी पत्नी को छेड़ते हुए बोला, हम मर्दों को मरने के बाद स्वर्ग में सुंदर परियां मिलती हैं। पत्नी ने बड़ी उत्सुकता से पूछा — अच्छा..... स्वर्ग में हम औरतों को क्या मिलेगा, इस पर पति ने चिढ़ाते हुए जवाब दिया कि आप को बंदर मिलेंगे, पत्नी तपाक से बोली हे भगवान! हमें यहां भी बंदर और स्वर्ग में भी बंदर..... ऐसा सुनकर पति महोदय अभी भी कोमा में है।

3. एक पत्नी अपने पति पर बहुत शक किया करती थी। पत्नी को खुश करने और उसका शक दूर करने के लिए पति ने दाढ़ी रख ली, पूजा पाठ करने लगा और गीता, रामायण भी पढ़ने लगा। गरीबों की मदद करने लगा। सारे गलत काम छोड़ दिए और प्रभु की भक्ति में लग गया। अब पत्नी फोन पर अपने पति के बारे में सहेली को बता रही थी कि यह नहीं सुधरेंगे। अब स्वर्ग की अप्सराओं के चक्कर में लगे हैं।

4. बीबी ने पूछा मुमताज़ के गुज़रने के बाद उसकी याद में शाहजहां ने ताज महल बनवाया था। मेरी याद में आप क्या बनवाओगे? पति ने भी प्यार से कह दिया कि झोंपड़ी तो बना ही दूगां।

नकद पुरस्कार प्राप्त करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची

वर्ष 2020-21

क्रम सं.	अधिकारियों/कर्मचारियों के नाम (श्री/श्रीमती)	पदनाम
1	बिमल पांडे	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
2	शम्मी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
3	अश्वनी कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
4	खेमराज	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
5	गौरव सिंह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
6	सरोज पाल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
7	एच.आर. उज्जल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
8	गुरप्रसाद	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
9	वंदना सेठी	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
10	शैलेन्द्र गौतम	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
11	आशुतोष	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
12	आलोक कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
13	गौरीश बब्बर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
14	महेन्द्र सिंह	वरिष्ठ निजी सहायक
15	संतप्रकाश	पर्यवेक्षक
16	करण सिंह	पर्यवेक्षक
17	हरिपाल	सहायक पर्यवेक्षक
18	सतीश कुमार	सहायक पर्यवेक्षक
19	अनिल ओबराय	सहायक पर्यवेक्षक
20	नागेन्द्र प्रसाद	सहायक पर्यवेक्षक

21	महेन्द्र बेदी	सहायक पर्यवेक्षक
22	मैराज आलम	स्टैनोग्राफर
23	नितिन	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
24	राकेश कुमार	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
25	जगदीश चन्द	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
26	मुनेश	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
27	एस.के.गुप्ता	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
28	राजिन्द्र कुमार	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
29	नरेश कुमार	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
30	सुरेश कुमार	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
31	रामनिवास	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
32	राजेन्द्र सिंह	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
33	हरप्रीत सिंह गिल	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
34	प्रीतम कौर	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
35	बलवीर सिंह भट्ठल	वरिष्ठ लेखा परीक्षक
36	निर्मल कौर	लेखा परीक्षक
37	अंकुर कुमार	डी.ई.ओ.
38	संतॉष कुमार	डी.ई.ओ.
39	अर्चना	एम.टी.एस.
40	लोकेश	एम.टी.एस.
41	सावन मल	एम.टी.एस.
42	सूरज प्रकाश	एम.टी.एस.

हिंदी पखवाड़ा 2020

विजेताओं की सूची

क्रम सं.	प्रतियोगिता	स्थान	नाम तथा पदनाम
1.	निबंध प्रतियोगिता	प्रथम	श्री आशीष कुमार, व. लेखापरीक्षक
		द्वितीय	श्री राजीव, व. लेखापरीक्षक
2.	शब्दज्ञान प्रतियोगिता	प्रथम	श्री दीपक सक्सेना सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
		द्वितीय	राजकमल, डी.ई.ओ.
3.	श्रुतलेखन प्रतियोगिता	प्रथम	संतोष कुमार सुमन, व. लेखापरीक्षक
		द्वितीय	प्रेम नारायण यादव, व. लेखापरीक्षक
4.	भाषण प्रतियोगिता	प्रथम	श्री रमेश बधावन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
		द्वितीय	श्री आलोक कुमार सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

****

जो भावना मुखरित नहीं हुई, जो अनुभूति के स्तर पर केवल मन ही मन, अन्दर ही अन्दर रचती रही, जिस रागिनी को किसी ने न तो सुना, न गाया-वह अपने शुद्ध रूप में परा के स्तर पर कितनी महान होती है उसकी अनुगूंज कितनी मधुर होती है इसे केवल विरह विदग्ध ही जानता है।

डॉ.विद्यनिवास मिश्र

※ सेवा निवृतियां ※

समय अपनी गति से चलता रहता है। जिन साथियों के साथ हम लम्बे समय से कार्य करते आ रहे हैं उनकी सेवानिवृति का समय कब आ जाता है पता ही नहीं चलता। इस कार्यालय में उनके द्वारा की गई सेवा तथा मार्गदर्शन के प्रति हम आभार प्रकट करते हैं। साथ ही उनकी दीर्घायु तथा भावी जीवन के लिए सुख समृद्धि की कामना करते हैं।

क्र.	अधिकारियों/कर्मचारियों का नाम (श्री/श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृति की तिथि
1.	श्री मुनीश कुमार लीखा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.08.2021
2.	श्री अशोक कुमार अधलखा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.10.2021
3.	श्री रणदीप राज	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31.10.2021
4.	श्रीमती सुनीता रावल	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30.11.2021
5.	श्री विजय कुमार अग्रवाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.12.2021

®®®®

श्रद्धांजलि

स्वर्गीय श्री शिव शंकर चौधरी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

होनहार बच्चे

मानवी शर्मा, सुपुत्री श्रीमती भावना शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, ने आई.सी.एस.ई. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा में 91 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

कर्तव्य पाण्डेय, सुपुत्र श्री बिमल पाण्डेय, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने सी.बी.एस.ई. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

दीपेद्र सिंह, सुपुत्र श्री उदयवीर सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने सी.बी.एस.ई. बोर्ड की बाहरवीं की परीक्षा में 93 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

मानसी शर्मा, सुपुत्री श्री हुसन कुमार शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, ने सी.बी.एस.ई. बोर्ड की बाहरवीं की परीक्षा में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

अतिशय सक्सेना, सुपुत्र श्री दीपक सक्सेना, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, ने वर्ष 2021 में राज्य बैडमिंटन चैंपियनशिप में मिक्स डबल्स अंडर 17 कैटेगरी में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चण्डीगढ़

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय), चंडीगढ़